Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 25 अंक 3 30 मार्च, 2025 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

जननायक चौधरी देवी लाल बनाम किसान

06 अप्रैल 25वीं पुण्य तिथि पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

राष्ट्र के इतिहास में 06 अप्रैल 2001 समस्त किसान–कामगार–काश्तकार के लिये एक अत्यधिक शोक दिवस के तौर से विख्यात रहेगा। इस दिन राष्ट्र के पूर्व उपप्रधान मंत्री धरती पुत्र जननायक ताऊ देवी लाल का पार्थिव शरीर धरती में विलीन हो गया। अतः एक लेखक ने ग्रंथ में व्याख्यान किया कि "जन–जन की आवाज धरती पुत्र की आत्मा धरती में विलिन हो गई"। भारतीय सेना के सैनिक दस्ते नें तिरंगे सहित पार्थिव शरीर को राष्ट्रीय ध्वज में सुशोभित कर श्रद्वा सुमन श्रद्वांजलि अर्पित की। अंतिम यात्रा के कारवां में राष्ट्र के कोने–कोने से लाखों की भीड़ उमड़ पड़ी और जननायक को अंतिम सलामी देते हुए आकाशभेदी नारे – "जब तक सूरज चांद रहेगा, ताऊ देवी लाल तेरा नाम रहेगा" गूंजने लगे। उनके श्रद्धाजंली समारोह में स्व० प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने कहा था कि वे "जन नायक और सच्चे सिपाही थे जो जीवन प्रयंत दलित, काश्तकार व ग्रामीण वर्ग के लिये संघर्षरत रहे।" अतः लेखक जननायक चौ. देवी लाल की 25वीं पुण्य तिथि पर समस्त किसान–कामगार–काश्तकार वर्ग के साथ–साथ जाट सभा चण्डीगढ पंचकुला व चौ. छोटू राम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण की ओर से केन्द्रिय सरकार से धरती पुत्र जननायक चौ. देवीलाल को स्वर्गीय चौ. चरण सिंह की तरज पर ''भारत रत्न'' से सुशोभित करने का पुरजोर आग्रह करते हैं क्योंकि चौ. देवीलाल वास्तव में जमीनी स्तर पर अपने समस्त राजनीतिक व नीजि जीवन में सच्चे किसान हितैषी व दूरगामी समाजसेवी के तौर पर संघर्षरत रहे। वे किसान, काश्ताकार व जनसाधारण के लिए विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी योजनाएं शुरू करने वाले एकमात्र सामाजिक सूत्राधार रहे हैं। अतः भारत सरकार द्वारा उनको ''भारत रत्न'' की उपाधि से सुशोभित करना ही उनको सच्ची श्रद्वांजलि होगी।

आज किसान वर्ग के प्रति सरकार की बेरूखी से व्यापित होकर ताऊ देवी लाल को याद कर लेखक अत्यन्त भावुक है क्योंकि ताऊ देवी लाल ने 1977 में हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने से पूर्व ही किसान–काश्तकार के लिये हुंकार भरी व कहा था कि "किसान–काश्तकार का बेटा देश का प्रधानमंत्री व दलित का बेटा राष्ट्रपति बनेगा" तो तभी देश आर्थिक व प्रजातात्रात्मक दृष्टि से सम्पन्न होगा और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का स्वालम्बी भारत का सपना साकार होगा। उस समय देश के विभिन्न कृषि प्रधान राज्यों विशेषकर हरियाणा, पंजाब व केन्द्र में शासक दलो के प्रति जनता का असन्तोष बढ़ने लगा व कुछेक आत्याधिक स्वार्थी व भ्रष्ट राजनेताओं के विरूध नारे लगने लगे व रोष उभरने लगा "धोखेबाज व भ्रष्ट राजनेता गदी छोडो, किसान विरोधी शासक गदी छोड़ों"। तब 1977 से 1979, 1987–88 व 1989 में ताऊ देवी लाल उन्हीं मुदों को लेकर जनता की आवाज बन आगे बढ़े व प्रजातंत्र की मजबूती के लिये नया नारा बुलन्द किया कि "लोकराज लोक लाज से चलता है" और जनहित के लिये स्वार्थी व भ्रष्ट जनप्रतिनिधियों को वापस बुलाने का कानून बनाने की मांग की। लेकिन यह अत्यन्त दुख का विषय है कि आज किसानों की समसयाओं का हल करने के लिये संघर्षरत किसानों की समस्याओं के समाधान के प्रति केन्द्रीय सरकार बिल्कुल गंभीर नहीं है।

कृषि उत्पादन की लगातार बढ़ती लागत व कृषि उपज की वाजिब कीमत न मिलने से व्यथित किसान सरकार द्वारा कृषि विरोधी तीन कानूनों को रद्द करवाने, तत्पश्चात कृषि उपज के मूल्य में (एम एस पी) न्यूनतम कृषि मूल्य की गारंटी शामिल कराने के लिये वर्ष 2020 से संघर्षरत है जिससे 800 से अधिक किसान जान गवां बैठे व दो दर्जन से अधिक आंखों की रोशनी खो बैठे व अपंगता का शिकार हो गये। संयुक्त किसान मोर्चा के किसान सरदार जगजीत सिंह डल्लेवाल लगभग चार मास से भूख हड़ताल पर हैं लेकिन सरकार के पास अन्नदाता की सुध लेने का समय नहीं है और 19 मार्च 2025 को जगजीत सिंह डल्लेवाल व अन्य किसान नेताओं को पंजाब पुलिस ने धरना स्थल से उठाकर गिरफतार भी कर लिया। आजादी के 78 वर्ष बाद भी किसान–काश्तकार की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं है क्योंकि केन्द्रिय सरकार में दीन बंधु चौ. छोटू राम व जननायक चौ. देवी लाल जैसा कोई किसान प्रवक्ता नहीं है जो कि राष्ट्रिय स्तर पर किसानी की समस्याओं को उजागर कर सके। अतः आज भी किसान बिना नेतृत्व संघर्ष कर रहा है। इस प्रकार का किसान जन आंदोलन वर्ष 1917 में शहीद भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह की अगुवाई में "पगंड़ी सम्भाल जटा" के जोशीले नारे में चलाया गया था। आज फिर किसान की पगड़ी उछाली जा रही है जिसकी लाज के लिये एकछत्र दंबग व निश्पक्ष किसान नेता की आवश्यकता है।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

चौधरी देवीलाल ने भातीय राजनीति का हर पद ग्रहण किया लेकिन अपनी जमीनी सोच और कार्यशैली में कभी बदलाव नहीं लाए। वे हर गांव के दूर कोने में बसने वाले को नाम से जानते थे, उनकी काटड़ी–बछड़ी की बात करते थे। पद की गारिमा–प्रतिष्ठा को बरकरार रखते हुए वे दरिद्र नारायण के घर द्वार तक पहुंचे और उनके जीवन में विकास की किरण भी पहुंचाई। सत्ता के बिना भी उन्होने लोगों के दिलों पर राज किया। वे शरीर जरूर छोड़ गए लेकिन उनकी आत्मा आज भी जीवित है। यह ताऊ का करिश्माई व्यक्तित्व ही था कि विधान सभा की 90 में से 85 सीटें जीते तथा 1999 में चौटाला जी के गठबंधन में भाजपा ने लोकसभा की सभी 10 सीटों पर विजय पताका फहराई।

उन्होने 14–15 वर्ष की आयु में ही संघर्ष का दामन थाम लिया था और वही उनकी जीवन शैली बन गया तभी उन्होने अपना नाम भारतीय इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित कर दिया। कांग्रेस मुक्त भारत की वास्तविक नींव चौधरी देवी लाल ने ही रखी थी। संपूर्ण राष्ट्र को उन्होने एक सूत्र में पिरो दिया और पहली बार केंद्र में कांग्रेस को सत्ता के गलियारों से दूर कर दिया। वे विपक्षी एकता के कर्णधार बने। वे किंग मेकर की भूमिका में ही रहे कभी किंग बनने का सपना ना देखा। प्रधानमंत्री ताज सर्वसम्मति से उन्हे दिया गया लेकिन तप–त्याग की मूर्ति चौधरी देवीलाल ने बहुत गारिमामय ढंग से श्री वी पी सिंह के सिर पर धर दिया। जब वे उनके मानकों पर खरे नहीं उतरे तो श्री चंद्रशेखर को गद्दी पर बिठा दिया और खुद संघर्ष की शैली पर चल निकले। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। देहात में सामूहिक कार्यों के लिए जनता द्वारा एकत्रित की गई राशि से तीन गुणा राशि की मैचिंग ग्रांट सरकार द्वारा देने का प्रावधान करना, घुमंतू परिवारों के बच्चों को स्कूल लाने हेतू प्रलोभन एक रूपया प्रति दिन से शिक्षा का प्रसार, स्त्री शिक्षा को बढ़ावा, गरीब बच्चों को वर्दी, कापी–किताब के साथ निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा, निःशुल्क जन स्वास्थ्य हेतू 'जच्चा–बच्चा कल्याण योजना, प्रशासन आपके द्वार, भ्रष्ट्राचार बंद पानी का प्रबंध, किसान के खेत तक पक्के खालें, सरकारी भूमि पर लगे वृक्षों से किसान की फसल को होने वाली क्षतिपूर्ति हेतू हिस्सा, वृद्धा सम्मान पैंशन, कन्यादान,विकलांग पैंशन,इटरव्यू के लिये जाने वाले छात्रों का किराया माफी आदि उनकी इतनी गहरी सोच को कोई कैसे नजर अंदाज कर सकता है। अतः पूरे राष्ट्र में ताऊ आज समाज कल्याण योजनाओं के सुत्राधार माने जाते हैं।

खेल खिलाडियों और सुरक्षा सेनाओं के जवानों के विकास हेतू ताऊ ने विशेष रूप रेखा बनाई। कुश्ती के खेल के प्रति उनकी विशेष रूचि थी। हरियाणा प्रांत में वर्ष 1978 में प्रथम बार मुख्यमंत्री बनते ही उन्होने करनाल पुलिस लाईन में कुश्ती खेल नियमावली के अनुसार गद्दों पर राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता करवाई। वार हीरोज मैमोरियल स्टेडियम अंबाला कैंट में प्रथम बार कुश्ती को राज्य खेल घोषित किया। इसी प्रकार वर्ष 1989 में हरियाणा पुलिस विभाग में सिपाही से लेकर इंस्पैक्टर तक के पदों में 3 प्रतिशत के आरक्षण का प्रावधान किया और प्रथम बार पूरे राष्ट्र में सुचारू तौर से खेल नीति बनाने की रूप रेखा तैयार की। इस नीति को आगे बढ़ाते हुए उनके सपुत्र पूर्व मुख्यमंत्री श्री औमप्रकाश चौटाला ने एक विधिगत खेल नीति अपनाई और सभी सरकारी विभागों में खिलाडियों के लिए 3 प्रतिशत कोटा आरक्षित किया। इसी कारण हरियाणा आज पूरे राष्ट्र में खेलों में प्रथम नंबर पर है। इसी प्रकार पुलिस कर्मियों की समय बद्घ पदौन्नति का प्रावधान किया। यही नहीं 15 से 18 वर्ष की सर्विस के बाद सिपाही को हवलदार पद पर पदौन्नति का नियम बनाया। इस प्रणाली को आगे बढ़ाकर श्री औमप्रकाश चौटाला ने अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल वर्ष 2000–2005 में 30–35 वर्ष की सर्विस वाले कर्मचारियों को पुलिस उपनिरीक्षक तक समयबद्ध पदौन्नति करने का प्रावधान किया। अतः आज हरियाणा प्रांत में सिपाही समयबद्ध तरक्की के आधार पर उप निरीक्षक के पद तक सेवा निवृत होता है जो कि पूरे राष्ट्र में एक अनुठी पहल है।

दूसरों के गम में शरीक होना और यथासंभव मदद उनकी फितरत थी। प्रदेश में बाढ़ आ गई तो रिंग बांध योजना बनी और आनन–फानन में कस्सी और तसला लेकर खुद पहुंच गए तथा यह योजना आज तक कारगर है। तदोपरांत बाढ़ ने कभी राज्य में नुकसान नहीं पहुंचाया। हरियाणा के हिस्से का पानी लेने हेतू फैसला भी करवाया। उस वक्त पंजाब से अकाली नेता उनके साथ रहे जो बाद में राजनैतिक कारणों से यह फलीभूत नहीं हो पाई लेकिन हरियाणा में इस कार्य की परिणिती में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। वे वास्तव में जन नायक थे। गांव में चौपाल की स्थापना और वहां हुक्का की व्यवस्था करना तथा गांव के विकास हेतू मैचिंग ग्रांट आदि अनेकों योजनाओं के वे जनक

रहे। आज सरकार की नीतियां सर्वथा किसान विरोधी है। आरामदायक श्रेणी में मानी गई कार पर बैंक लोन का ब्याज 7.65 प्रतिशत है जबकि किसान के लिये जरूरी कृषि यंत्र–ट्रैक्टर को वर्तमान केन्द्रिय द्वारा वाणिज्य वाहन घोषित कर सभी प्रकार के पंजीकरण कर, रोड़ टैक्स, नवीकरण खर्च आदि लगा दिये गये जबकि पूर्व उपप्रधान मंत्री चौ० देवी लाल ने ट्रैक्टर को किसान का गड्डा(वाहन) मानकर सभी करों से मुक्त किया था।

छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने हेतू पंजाब विधानसभा में भू–पट्टेदारी अधिनियम 1953 बनवाकर मुजारों की बेदखली को रोका गया। इस अधिनियम के द्वारा 6 साल से भूमि काश्त कर रहे मुजारों को अदालत के माध्यम से आसान किश्तों पर जमीन खरीदने का अधिकार दिलाकर मालिकाना हक दिलवाया। इसके इलावा उन्होने अपनी खुद की अधिकतर पुस्तैनी जमीन मुजारों व छोटे काश्तकारों को काश्त करने के लिए स्थाई तौर पर आंबटित कर दी थी। वे जन साधारण के कल्याण व उत्थान के लिए आवश्यक मूलभूत कल्याणकारी नीतियों के सुत्राधार रहे हैं। सारे राष्ट्र में उन्होने गरीब, किसान व शोषित वर्ग के लिए विभिन्न प्रकार की समाज कल्याणकारी योजनाएं शुरू की थी जिसका बाद में केंद्रीय सरकार तथा अन्य राज्य सरकारों ने अनुसरण किया है।

उन्होने हरियाणा बनने से पूर्व आम आदमी को न्याय दिलाने के लिए संघर्ष किए। वे अपनी दूरदर्शी व पारदर्शी सोच के द्वारा हर प्रकार की समस्या का समाधान निकाल लेते थे। राष्ट्रहित में किसी भी राजनैतिक व सामाजिक मुद्दे पर वे अपने विरोधियों तक से भी सलाह मश्वरा करने में संकोच नहीं करते थे। अपनी निष्कपट, निस्वार्थ व त्यागी छवि के कारण वे समस्त राष्ट्र में 'ताऊ' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका मानना था कि गांवों के विकास के बिना राष्ट्र तरक्की नहीं कर सकता क्योंकि शहरों की समृद्धि का मार्ग गांवों से होकर गुजरता है। इसलिए अपने शासनकाल में ग्रामीण मजदूर व काश्तकारों के साथ अन्याय नहीं होने दिया। किसान कामगार व ग्रामीण मजदूर के हितों के प्रति उनके प्रयासों को देखते हुए स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वर्गीय ताऊ देवीलाल के प्रति इस प्रकार से विचार व्यक्त किए – "चौधरी देवीलाल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है जो कि दूसरों को आगे बढने के लिए सदैव गतिशील व मार्गदर्शक हैं, उनके व्यक्तित्व में एक खास दृढ़ता है और संघर्ष ही उनका जीवन है लेकिन उनके हृदय में दूसरों के प्रति प्रेम व सहानुभूति का गतिशील आवास है। हरियाणा प्रांत के हितों के प्रति सदैव सचेत चौधरी देवीलाल को संपूर्ण राष्ट्र के भविष्य की भी चिंता सताई रहती थी।"

लेखक को उनके दलित प्रेम का निजी ज्ञान है क्योंकि सन् 1986–87 में स्वंय उन्होने दलित वर्ग से संबंधित एक आई०ए०एस० (सेवा निवृत) अधिकारी श्री कृपाराम पूनिया को राजनीति में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया और प्रथम बार उनको विधायक बनाकर हरियाणा में सबसे प्रभावशाली कैबीनैंट मंत्री बनावाया और बातचीत में कहते थे कि एक दिन श्री पुनिया को देश का राष्ट्रपति बनाकर अपना संकल्प पूरा करेगें। अपनी इसी सोच के आधार पर उन्होने अनुसूचित जातियों व दलित वर्ग से अनेकों भाईयों को राजनीति में प्रवेश करवाया–जैसे कि नारनौल से श्री मनोहरलाल सैनी व भिवानी से श्री जय नारायण प्रजापति को सांसद बनवाया। वर्ष 1978 में पार्टी के विरूद्ध जाकर श्री फूसा राम गुज्जर को नारनौल से विधायक बनाया। इसी प्रकार कलायत विधानसभा क्षेत्र से श्री बनारसी दास बाल्मिकी, घरोंडा से श्री पीरू राम जोगी, टोहाना से श्री आत्माराम गिल आदि को विधायक बनाकर विधानसभा में प्रवेश करवाया। उन्होने हमेशा मजदूर व किसान वर्ग की आवाज को बुलंद किया और उनकी यह अवधाराणा थी कि राजनैतिक ताकत हासिल करके ही किसान–मजदूर का जीवन सुधारा जा सकता है। हरियाणा राज्य को प्रथम प्रांत का दर्जा दिलवाने में चौ० देवीलाल का विशेष योगदान रहा है। उन्होने आल इंडिया हरियाणा एक्शन कमेटी गठित करके पंजाब सरकार व केंद्रीय सरकार के समक्ष भाषा तथा अन्य राजनैतिक आधार पर अलग प्रदेश के पक्ष में दलिलें पेश की और कड़े संघर्ष के बाद हरियाणा प्रांत को अस्तित्व दिलाने में सफलता प्राप्त की।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब–मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ–साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर

ग्रामीण गरीब–मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। अतः लेखक एक बार फिर से जननायक चौ० देवीलाल की किसान–कामगार–काश्ताकार, दलित व छोटे व्यापारी वर्ग के सच्चे हितैषी व जमीनी स्तर के समाज सेवी की छवि के सम्मान हेतु भारत सरकार से उनको "भारत रत्न" की उपाधि देने की पुरजोर मांग करते हैं। एक उदार हृदय एवं महान आत्मा–ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त–सिंतबर 1999 से 2005 तक चौधरी साहब के गुप्तचर विभाग के अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख रहे हैं।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

वीर यौद्धा चौधरी रामलाल खोखर (जाट)

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)
(मो० 9466110050)

सन् 1001 ई० से 1027 ई० तक मोहम्मद गजनवी (गजनी) ने भारत पर 17 हमले किये, जिसमें उसने सभी हमलो में अनेकों मंदिरों को लूटा और तोड़ा। वहां से अपार धन–दौलत जिसमें हजारों मण सोना–चांदी और हीरे–ज्वाहरात आदि ऊंटों, घोड़ो व गधों पर लाद कर ले जाता रहा। रास्ते में पंजाब, मुलतान, सिंध व जेहलम क्षेत्र के जाटों का हमेशा वर्षच्व रहा। मोहम्मद गजनी के द्वारा भारत के मंदिरों से लूटे हुये धन–दौलत को हमेशा इस क्षेत्र के जाटों ने लूटा। कभी आधा लूट लिया तो कभी 80 प्रतिशत और सन् 1027 ई० में मोहम्मद गजनी द्वारा उनके आखिरी हमले में सोमनाथ के मंदिर से लूटा गया अपार धन–दौलत तो पंजाब के जाटों ने लगभग सारा ही लूट लिया था। सोमनाथ के मंदिर से सोना–चोदी, हीरे–ज्वाहारात जड़े हुये भारी–भरकम दरवाजे भी वह हाथियों पे लादकर ले गया, वो भी पंजाब के जाटों ने मोहम्मद गजनी से छीनकर वापिस सोमनाथ के मंदिर में भिजवा दिये थे। इस तरह का अद्वितीय कार्य पंजाब के जाटों द्वारा ही किया गया था। पंजाब के जाटों में हमेशा से प्राचीन समय में खोखर जाटों का दबदबा रहा है। पंजाब के क्षेत्र में जाट शुरू से ही शक्तिशाली रहे हैं। भारत पर पश्चिम से होने वाले सभी हमले पंजाब के जाटों द्वारा ही रोके जाते रहे। पोरस से लेकर चन्द्रगुप्त मोर्य, सम्राट अशोक, सम्राट विक्रमादित्य, सम्राट समुन्द्रगुप्त, हर्षवर्धन व अनंगपाल तोमर आदि सभी जाट जाति के महान सम्राट रहे है। मोहम्मद गजनी के मरने के बाद काबूल कंधार के क्षेत्र से मोहम्मद गौरी ने भारत पर हमले शुरू कर दिये।

खोखर भारतीय उपमहाद्वीप के पंजाब क्षेत्र का एक जाट समुदाय है जो वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के पंजाब और आसपास के क्षेत्रों में निवास करते हैं। भारत में खोखर आमतौर पर हिन्दू और सिख होते हैं जबकि पाकिस्तान में वे मुस्लिम होते हैं। खोखर राजस्थान, पंजाब, सिंध, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पायी जाने वाला एक मुख्य जाट गोत्र है। मुस्लिम खोखर लोगों को हिंदू जाट और सिख समुदायों से धर्मान्तरण किया हुआ माना जाता है। मध्यकाल के फारसी इतिहासकार फरिश्ता ने तत्कालीन खोखर लोगों को 'धर्म और नैतिकता विहीन बर्बर' जनजाति कहा है।

जाट उत्तरी भारत और पाकिस्तान में पारंपरिक रूप से किसानों का समुदाय हैं। वह मूल रूप से सिंध की निचली सिंधु नदी–घाटी में खेती करते थे। जाट ने मध्ययुगीन काल में उत्तर में पंजाब क्षेत्र में पलायन किया और बाद में 17वीं और 18वीं शताब्दी में दिल्ली क्षेत्र, पूर्वोत्तर राजपुताना और पश्चिमी गंगा के मैदानों में पलायन किया। इस्लाम, सिख और हिंदू धर्म को मानने वाले यह लोग अब पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांतों में और भारतीय राज्यों पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में रहते हैं।

17वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में जाटों ने मुगल साम्राज्य के खिलाफ फिर हथियार उठाए। हिंदू जाट राज्य महाराजा सूरजमल (1707–1763) के अधीन अपने चरम में पहुँच गया। 20वीं शताब्दी तक, पंजाब,

पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई हिस्सों में जमींदार जाट एक प्रभावशाली समूह बन गए। इन वर्षों में, कई जाटों ने शहरी नौकरियों के पक्ष में कृषि को छोड़ दिया और उच्च सामाजिक स्थिति का दावा करने के लिए अपनी प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का उपयोग किया।

सिन्ध से झेलम के दरम्यान बसने वाले खोखर जाट पूर्ववर्ती मध्यकाल में बड़े लड़ाकू हुऐ थे। जिस गजनवी के नाम से बड़े बड़े राजा महाराजा भय खाते थे। जाटों ने उस गजनवी को लूट कर उसके दिल में भय पैदा कर दिया। वह सोक्षनाथ के मन्दिर से लूट के हजारो मण सोना–चाँदी व हिरे–ज्वहारात गजनी नहीं ले जा पाया था। यह ऐतिहासिक प्रमाण है कि इन खोखर जाटों के दिल्ली के तोमर राजाओं से वैवाहिक सम्बन्ध रहे थे। इन खोखरों ने झेलम के आसपास अपना राज्य कायम किया। जब गौरी ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया, राजा पृथ्वीराज चौहान की हत्या कर दी (बिजोलिया शिलालेख अनुसार), तो जाट खापों ने गौरी के खिलाफ बगावत का बिगुल बजा दिया। गौरी ने हिन्द की जनता पर अत्याचारो की बाढ़ ला दी। 1205–06 में खोखरों ने लाहौर पर अधिकार कर लिया तथा पंजाब के शासक बनने की घोषणा कर दी।

(मनवेन्द्र सिंह तोमर और दिनेश सिंह बैहणीवाल)

दलीप सिंह अहलावत लिखते हैं कि महमूद गजनी की 30 अप्रैल सन् 1030 ई० को मृत्यु हो गई। इसके मरते ही गजनी और हिरात के बीच गौर नामक स्थान से एक नवीन शक्ति का उदय हुआ जिसने गजनी का सम्पूर्ण वैभव नष्ट करके गौर जनपद की वृद्धि के लिए गजनी के वंश को भी नष्ट कर दिया। अलाउद्दीन गौरी गजनी का शासक बना। उसकी मृत्यु के बाद सन् 1173 ई० में शहाबुद्दीन गौरी, जिसको मोहम्मद गौरी भी कहा जाता है, गजनी का शासक बना। इसका छोटा भाई गयासुद्दीन गौर जनपद का शासक बना। शहाबुद्दीह गौरी, अलाउद्दीन गौरी का भतीजा था। यह गौरवंश जाटवंश है जो इस्लाम की आंधी में मुसलमान धर्म के अनुयायी बन गये। शहाबुद्दीन गौरी भी गौरवंश का जाट था।

खोखर समुदाय का इतिहास

चौधरी रामलाल खोखर का जन्म भारत के हरियाणा जिले के बलाली गाँव में हुआ था उनके पिता का नाम श्री रामसिंह खोखर था तथा माता का नाम श्रीमती हंसा खोखर था। रामलाल खोखर के चार बच्चे थे जिनमें से दो बेटियां और दो बेटे थे।

यह भारत के पंजाब क्षेत्र का एक जाट समुदाय है जो कि भारत में वर्तमान समय में और पाकिस्तान के पंजाब और इसके आस–पास के क्षेत्रों में वास करता है। भारतीय मूल के खोखर आमतौर पर हिन्दू और सिख होते है, वहीं पाकिस्तानी क्षेत्र के खोखर मुस्लिम समुदाय के होते है। मुस्लिम खोखर को हिंदू जाट और सिक्ख जाट समुदायों से धर्म परिवर्तित किया हुआ माना जाता है। स्रोत– मध्यकाल के फारसी इतिहासकार फरिश्ता ने खोखर समुदाय के लोगों को (धर्म और नैतिकता विहिन बर्बर जाति कहा है। खोखरों ने मोहम्मद गौरी के खिलाफ विद्रोह किया था। 1206 में गौरी ने इस विद्रोह का बडी निर्दयता से दमन कर दिया था। जिसके पश्चात गजनी वापिस लौटते समय कोह नामक क्षेत्र के धम्याक नामक स्थान पर खोखर समुदाय के लोगो ने मोहम्मद गौरी पर हमला कर दिया और उसकी गर्दन काट दी थी जिसके परिणामस्वरुप उसका पुरा साम्राज्य रेत के महल की तरह ध्वस्त हो गया था।

भारत में खोखर समुदाय की दो अलग–अलग जातियां पाई जाती है। कुतुबशाह ने एक हिंदु राजा की लड़की से विवाह किया, जिसके कारण उनकी वंश परंपरा के लोग कुतुबशाही खोखर के रुप में जाने जाते है। दूसरे खोखर दिल्ली के करीब हिन्दू जाट थे। इस प्रकार खोखर समुदाय जाट खोखर और कुतुबशाही खोखर दो अलग जातियों में विभाजित हो गया। इतिहासिक प्रमाणों के तहत पंजाब के खोखर जाटों के दिल्ली के तोमर जाटों से वैवाहिक सम्बंध रहे हैं। सर्वप्रथम जाट समुदाय ने कश्मीर कि झेलम नदी के किनारे अपने राज्य की स्थापना की। मोहम्मद गौरी ने जब पृथ्वीराज चौहान को मारकर दिल्ली पर कब्जा कर लिया तब खोखर एवं जाटों के पूरे समुदाय ने मोहम्मद गौरी के खिलाफ बगावत का बिगुल बजाया। क्योंकि दिल्ली पर कब्जा करने के बाद मोहम्मद गौरी ने भारतीयो पर अत्याचार और शोषण करना प्रारम्भ कर दिया था। 1205–06 के समय काल में खोखर जाटों ने लाहौर पर कब्जा कर लिया था तथा पंजाब का शासक बनने की घोषणा कर दी थी। सन् 1206 में मोहम्मद गौरी एक बार फिर भारत आया।

सन् 1175 से 1206 ई० तक मोहम्मद गौरी के उत्तरी भारत पर आक्रमण –

मोहम्मद गौरी ने गजनी पर अपना शासन स्थिर करके सम्पूर्ण अफगानिस्तान पर आतंक जमा लिया। फिर उसने भारतवर्ष की ओर बढ़ने का विचार किया। उस समय भारतवर्ष में पृथ्वीराज चौहान का शक्तिशाली शासन दिल्ली एवं अजमेर पर था। जयचन्द राठौर का कन्नौज पर शासन

था। सबसे पहले गौरी ने सन् 1175 ई० में ईस्मायल कबीले के मुसलमानों को हराकर मुलतान पर अधिकार कर लिया।

कच्छ के राजाओं को छल से जीत लिया। लाहौर न जीत सकने के कारण, उसने खुसरो मलिक के साथ संधि कर ली और गजनी लौट गया। उसके चले जाने के बाद खुसरो मलिक ने खोखर जाटों की सहायता से सियालकोट के दुर्ग पर घेरा डाल दिया। यह सूचना मिलते ही गौरी ने आकर लाहौर पर आक्रमण कर दिया और कूटनीति द्वारा सन् 1186 ई० में खुसरो मलिक को जीत लिया और उसे मार दिया गया और सुबुक्तगीन वंश का अन्त कर दिया। इस प्रकार लाहौर पर अधिकार कर लिया।

सन् 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध –

पृथ्वीराज, जयचन्द राठौर की राजकुमारी संयोगिता को स्वंयवर से उठा लाया था जिसके कारण जयचन्द पृथ्वीराज से दुश्मनी रखता था। जाट वीरों का इतिहास दलीप सिंह अहलावत, पृष्ठान्त–565

पृथ्वीराज चौहान ने इस युद्ध के लिए हरयाणा सर्वखाप पंचायत और जाट खापों से सहायता मांगी। जाट खापों ने 22000 शूरवीरों की सेना भेजी। उन्होंने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया और मोहम्मद गौरी की सेना को हराकर भगा दिया। (सर्वखाप पंचायत रिकार्ड और जाट इतिहास पृ० 106, लेखक लेटिनेन्ट रामसरूप जून)

पृथ्वीराज अपनी तथा उपर्युक्त सहायक सेना एवं जाट शूरवीरों को साथ लेकर सन् 1191 ई० में तराइन के युद्ध क्षेत्र में गौरी सुलतान की सेना से जा टकराया। दोनों ओर से भयंकर युद्ध होने लगा। राजपूतों ने उसकी सेना के दोनों पक्षों पर बड़ी भीषणता से आक्रमण किया और उसे तितर–बितर कर दिया।

राजा के भाई गोविन्दराय ने सुलतान को भी घायल किया। परन्तु एक खिलजी योद्धा उसको रणक्षेत्र से बाहिर ले गया। इस दुर्घटना से मुसलमानों में भगदड़ मच गई। वे मैदान छोड़कर भागने लगे। इससे पहले उनको हिन्दुओं के कभी इतनी बुरी तरह से नहीं हराया था। सुलतान हारकर गजनी पहुंच गया।

सन् 1192 में मोहम्मद गौरी का पृथ्वीराज से दूसरा युद्ध –

मोहम्मद गौरी ने गजनी जाकर एक शक्तिशाली सेना तैयार की जिसमें अफगान, तुर्क और ईरानी आदि जातियों के सैनिक सम्मिलित थे। जयचन्द राठौर के निमंत्रण पर मोहम्मद गौरी द्वारा एक लाख बीस हजार सैनिकों के साथ सन् 1192 ई० में तराईन क्षेत्र में पहुंच गया। जयचन्द राठौर तथा सोलंकियों की शक्तिशाली सेनायें भी आकर उसके साथ मिल गईं। पृथ्वीराज भी चौहानों तथा अन्य राजपूतों की बड़ी सेना तथा सर्वखाप पंचायत के 18000 मल्ल योद्धाओं को साथ लेकर तराइन के रणक्षेत्र में जा पहुंचा। दोनों ओर की सेनाओं में घमासान युद्ध होने लगा। सर्वखाप के 18000 सैनिक योद्धा, मुसलमान सेना के जिस बाजू पर नियुक्त किए गए थे, वहां पर बड़ी वीरता से धावा करके उन्होंने मुसलमान सैनिकों को मार–मारकर 15 मील पीछे को धकेल दिया। (सर्वखाप पंचायत रिकार्ड)

प्रातः काल से सायंकाल तक घनघोर युद्ध हुआ। सुलतान 12000 अश्वारोही धनुर्धारियों को लेकर राजपूत सैनिकों पर टूट पड़ा जिन्होंने बहुत से राजपूत सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। राजपूत घबरा गए और मुसलमानों के सामने लड़ने का साहस छोड़ बैठे। वे रणक्षेत्र छोड़कर भागने लगे। जाट सैनिक युद्ध करते–करते वीरगति को प्राप्त हुए। मुसलमान इतिहासकार लिखते हैं कि पृथ्वीराज युद्धभूमि छोड़कर सिरसा की तरफ भाग रहा था तो सरस्वती नदी के किनारे महोम्मद गौरी और उसके सैनिको ने पकड़ लिया और मौत के घाट उतार दिया। सुलतान विजयी रहा। पृथ्वीराज की हार के बाद राजपूत संभल नहीं सके और इनकी शक्ति कम होती गई। अब मोहम्मद गौरी का दिल्ली तथा अजमेर पर अधिकार हो गया।

सन् 1194 ई० में मोहम्मद गौरी का कन्नौज के राजा जयचन्द पर आक्रमण –

जयचन्द ने सोचा था कि मेरा शत्रु पृथ्वीराज मारा गया और अब मैं दिल्ली एवं भारत का शासक बन जाऊंगा। किन्तु देशद्रोह का फल चखाने के लिए सन् 1194 ई० में सुलतान गौरी ने कन्नौज पर भी प्रबल आक्रमण कर दिया जिसकी जयचन्द को तनिक भी आशा न थी। दोनों ओर की सेनाओं में यू० पी० के इटावा जिले में चन्द्रावर नामक स्थान पर जमकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुसलमानों ने राठौरो की सेना को बुरी तरह हरा दिया। राजा जयचन्द मारा गया। इसके बाद विजयी सुलतान बनारस पहुंचा। उसने मन्दिरों को तुड़वा दिया और उनके स्थान पर मस्जिदें बनवाने की आज्ञा दी। कन्नौज, बनारस आदि के 200 मन्दिरों को तुड़वाकर अपार धनराशि 4000 ऊंटों पर लादकर तथा लाखों हिन्दू गुलाम साथ लेकर मोहम्मद गौरी गजनी पहुंच गया।

गजनी जाने से पहले सुलतान गौरी ने अपने गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को 1194 ई० में भारत में अपने राज्य का

उपशासक नियुक्त कर दिया था। इसने भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों को जीत लिया। मोहम्मद गौरी का गुलाम मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी नामक था। उसने सन् 1197 ई० में बिहार को जीत लिया और वहां के बौद्ध विहार तथा स्तूपों को नष्ट कर दिया और अनेक बौद्ध पुस्तकों को नष्ट कर दिया। इससे बौद्ध धर्म की शक्ति को बड़ा धक्का लगा। फिर उसने बंगाल को जीत लिया। वह बिहार और बंगाल का गौरी का उपशासक बनकर राज्य करने लगा।

खोखर जाटों का विद्रोह और मोहम्मद गौरी की मृत्यु –

मिश्र बन्धु के अनुसार मोहम्मद गौरी का राज्य पश्चिम में खुरासान, सीस्तान, पूर्व में बंगाल, उत्तर में तुर्किस्तान, हिन्दूकुश और दक्षिण में बिलोचिस्तान पर था। इसमें काबुल, कन्धार, हिरात, गजनी आदि सम्मिलित थे। मोहम्मद गौरी ने मध्यएशिया पर आक्रमण कर दिया। सन् 1205 ई० में वहां पर इसकी करारी हार हुई। इस हार के बाद सभी प्रदेशों के राज्यपालों ने इसके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ कर दिये। मुलतान पर एक नया शासक बन गया। खोखर जाटों ने लाहौर पर अधिकार कर लिया तथा पंजाब के शासक बनने की घोषणा कर दी।

सन् 1205 ई० में खोखरों के विद्रोह को दबाने के लिए मोहम्मद गौरी फिर भारत में आ गया। उसने विद्रोह को दबा दिया। परन्तु जब वह लाहौर से 15 मार्च 1206 ई० को गजनी वापिस जा रहा था, तब धम्याक के स्थान पर मुलतान के 25,000 खोखर जाटों ने मोहम्मद गौरी की सेना पर धावा बोलकर मोहम्मद गौरी का सिर काट दिया। सिर काटने में मुख्यतः खोखरों के सेनापति चौधरी रामलाल खोखर थे। जिन्होंने मोहम्मद गौरी का सिर एक ही तलवार के वार से उसकी धड़ से अलग कर दिया था और मोहम्मद गौरी का मारकर पृथ्वीराज चौहान का बदला लिया था।

मोहम्मद गौरी के मरते ही गौरी का विशाल साम्राज्य ऐसा अस्त हो गया कि मानो वह जादू का चमत्कार था। (भारत का इतिहास, पृ० 369).

मोहम्मद गौरी के कोई पुत्र न था। उसके मरने के पश्चात् उसकी इच्छा के अनुसार सन् 1206 ई० में उसका गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक देहली साम्राज्य का बादशाह बना। जिसने गुलाम वंश के शासन की नींव रखी।

चौधरी लहरी सिंह मलिक

(3 मार्च 1901 से 3 अक्टूबर 1981)

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

चौधरी लहरी सिंह मलिक रोहतक निर्वाचन क्षेत्र से पूर्व सांसद (तीसरी लोकसभा 1962–67) थे। हालांकि एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और सर छोटू राम के सहयोगी, पेशे से वह स्वतंत्रता–पूर्व युग में एक वकील थे। वह 1946–61 तक पंजाब विधान सभा के सदस्य भी रहे। वह 1946–1955 तक पंजाब सरकार में मंत्री भी रहे। चौधरी लहरी सिह हरियाणा के सोनीपत जिले की गन्नौर तहसील में स्थित भिगाण गांव के रहने वाले थे उनका जन्म 3 मार्च 1901 में रोहतक जिले की सोनीपत तहसील के गांव भिगाण में एक साधारण किसान/जाट परिवार चौ0 रामनारायण के घर हुआ था। आपने सोनीपत से मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त की तथा डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से एफ.ए. पास करके रामजस कॉलेज, दिल्ली से बी.ए. की शिक्षा प्राप्त की और लाहौर, पंजाब यूनिवर्सिटी से एल एल. बी. की शिक्षा प्राप्त की तथा 1928 में सोनीपत बाद में रोहतक में वकालत शुरू कर दी और वकालत के साथ–साथ राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया। सन् 1935 में आप जिला बोर्ड रोहतक के सदस्य चुने गए। दिसम्बर, 1939 से मार्च, 1940 तक ग्राम आसौदा जिला रोहतक में कांग्रेस का प्रचार न होने देने के कारण 3 माह तक सत्याग्रह चला जिसमें चौ० लहरी सिंह ने पूरा भाग लिया और कई कांफ्रेंसों में भाषण दिये। 10 जनवरी, 1940 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के डेलीगेट चुने गए। सितम्बर, 1940 में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू कर दिया इसलिए आपने जिता बोर्ड की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया और सत्याग्रह के कार्य में सक्रिय हो गए और घरेलू हालात के कारण आप जेल न जा सके। लेकिन आपके बड़े भाई चौ चरण सिंह तीन बार सत्याग्रह करके जेल गए। इन्ही दिनों सोनीपत में आपका हरियाणा नेशनल हाई स्कूल चल रहा था जिसे सरकार ने जब्त कर लिया। फरवरी, 1946 में आप पंजाब विधानसभा के पहली बार सदस्य बने और कांग्रेस

व जमींदारा लींग की गठबन्धन सरकार में मंत्री बनाये गये। चौ० लहरी सिंह सर छोटूराम के सहयोगी भी थे। मन्त्री रहते हुए उन्होंने कई प्रशासनिक कार्य बुहत अच्छे किये।

गन्नौर विधानसभा क्षेत्र ने प्रदेश की राजनीति को कई दिग्गज राजनेता दिए है। जिन्होंने संयुक्त पंजाब और फिर 1966 में हरियाणा के गठन के बाद तक प्रदेश की राजनीति को प्रभावित किया है। यहां के प्रतिनिधि क्षेत्र के मुद्दे दबंगई से उठाने व अपनी बेबाक टिप्पणियों के लिए जाने जाते रहे हैं। विस सीट पर शुरू से ही स्व. लहरी सिंह व उनके परिवार का वर्चस्व रहा है। चुनाव परिणाम इस परिवार के द्वारा ही प्रभावित किए जाते रहे है। इस सीट पर पूर्व शिक्षा मंत्री स्व. शांति राठी ने भी अपनी कार्यशैली के बलबुते पर प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई है। जाट बाहुल्य इस सीट पर दो बार ब्राह्मण प्रत्याशियों ने भी जीत दर्ज की है।

आजादी के बाद वर्ष 1951 के चुनाव में लहरी सिंह ने जमीदार पार्टी के प्रत्याशी चंद्रभान छिक्कारा तथा 1957 में निर्दलीय चिरंजीलाल को हराने में कामयाबी हासिल की थी। संयुक्त पंजाब में उन्हें मौजूदा हरियाणा के हितों की लड़ाई लड़ने के लिए जाना जाता रहा। लेकिन 1962 में हुए चुनाव में कांग्रेस ने जमींदार पार्टी छोड़कर आए चंद्रभान छिक्कारा को मैदान में उतारा, लेकिन लोगों की नाराजगी के चलते वह निर्दलीय पं. चिरंजीलाल शर्मा से चुनाव हार गए। वर्ष 1967 में कांग्रेस ने लहरी सिंह के भतीजे राजेंद्र सिंह को मैदान में उतारा, इस चुनाव में उन्होंने अपने चाचा की हार का बदला लेते हुए निर्दलीय चिरंजीलाल को हराने में कामयाबी हासिल की। वर्ष 1968 के चुनाव में राजेंद्र सिंह विशाल हरियाणा पार्टी के टिकट पर मैदान में उतरे तथा कांग्रेस प्रत्याशी प्रताप सिंह को हराया। लेकिन 1972 में निर्दलीय मैदान में उत्तरे प्रताप सिंह से वह चुनाव हार गए।

आपातकाल के बाद 1977 में हुए चुनाव में जनता पार्टी ने शांति राठी को मैदान में उतारा। उनके सामने विशाल हरियाणा पार्टी के टिकट पर राजेंद्र सिंह तथा कांग्रेस के टिकट पर फतेह सिंह मैदान में उत्तरे। जनता पार्टी की लहर में शांति राठी ने जीत दर्ज की। इसके बाद 1982 के चुनाव में कांग्रेस ने जगदीप सिंह चीमा को मैदान में उतारा, लेकिन वह निर्दलीय मैदान में उत्तरे राजेंद्र सिंह से चुनाव हार गए। वर्ष 1987 के चुनाव में लोकदल के टिकट पर वेद सिंह मलिक ने राजेंद्र सिंह को हराया। इसके बाद वर्ष 1991 के चुनाव में कांग्रेस ने फिर से शांति राठी को मैदान में उतारा। इस चुनाव में उन्होंने जनता पार्टी के उम्मीदवार वेद सिंह मलिक को हराने में कामयाबी हासिल की। पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल ने काग्रेस से बगावत कर हरियाणा विकास पार्टी का गठन किया। इसके बाद 1996 में हविपा के टिकट पर रमेश कौशिक ने समता पार्टी के वेद सिंह मलिक को हरा दिया। इसके बाद 2000 के चुनाव में कांग्रेस ने स्व० राजेंद्र सिह के पुत्र जितेंद्र मलिक पर दांव आजमाया। उनके मुकाबले में इनेलो के वेदसिंह मलिक थे। लेकिन उन्होंने पहली बार में ही जीत दर्ज की। वर्ष 2005 में भी जितेंद्र मतिक दुबारा यह सीट कांग्रेस की झोली में डालने में कामयाब रहे। वर्ष 2009 में जितेंद्र मलिक के सांसद चुने जाने के बाद कांग्रेस ने पं० चिरंजीलाल के पुत्र कुलदीप शर्मा को मैदान में उतारा। उन्होंने इस चुनाव में इनेलो के कृष्णगोपाल त्यागी को शिकस्त दी।

चौ० लहरी सिंह जब पंजाब विधान सभा में 1946 में सदस्य बने तब उनको पहली बार मंत्री बनाया गया। उस समय उनके द्वारा किये गये अनेक उल्लेखनीय कार्यों की आज भी लोग सराहना करते है। उनके द्वारा किये गये अनेक कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कार्य यह है कि वह समय ठग डाकू और लूटेरों का था जिनको लोग मखरूर और फरहैरी भी कहते थे। चौ० लहरी सिंह ने सभी मखरूर पार्टीयों का सफाया करने का काम किया था। कुछ तो उनके समझाने से मुख्यधारा में शामिल हो गये और जो मुख्य धारा में शामिल नहीं हुये वो पुलिस की गोलियों का शिकार हुये, जिनमें सबसे प्रसिद्ध मखरूर/डाकू हेमराज दलाल गांव मेहरड़ा, जिला जीन्द हुआ करते थे। वो पुलिस का सामना करते हुये गांव मेरहड़ा में ही पुलिस की गोलियों का शिकार बन गये थे। चौ० लहरी सिंह ने प्यासी भूमि के लिये अनेक डिस्ट्रीब्यूट्री और रजबाहे निकलवायें। जिनसे किसानों की प्यासी भूमि में पानी लगने से किसानों की उपज बढ़ी और किसानों में प्रसन्नता की लहर दौड़ी और अपने समय में किसानों को ज्यादा से ज्यादा पानी नहरों से दिलवाया। ऐसी महान हस्ती को हम बार–बार नमन करते है।

नीरा आर्य

– लक्ष्मण सिंह फौगाट
(मो० 6280830760)

डॉ० नीरा आर्य आजाद हिन्द फौज में रानी झांसी रेजिमेंट की सेनापति/चीफकमाण्डर थीं, जिन पर अंग्रेजी सरकार ने गुप्तचर होने का आरोप भी लगाया था। इन्हें 'नीरा नागिनी' के नाम से भी जाना जाता है। इनके भाई बसंतकुमार भी आजाद हिन्द फौज में थे। नीरा नागिनी और इनके भाई बसंतकुमार के जीवन पर कई लोक गायकों ने काव्य संग्रह एवं भजन भी लिखे हैं। वीरांगना नीरा आर्य के नाम से इनके जीवन पर एक महाकाव्य भी है। इनके जीवन पर एक फिल्म भी बनी है।वह एक महान देशभक्त, साहसी एवं स्वाभिवानी स्वतंत्रता सेनानी भी थीं, जिन्हें गर्व और गौरव के साथ याद किया जाता है। हैदराबाद की महिलाएं इन्हें पेदम्मा कहकर पुकारती थीं।

वीरांगना नीरा आर्य के नाम पर एक राष्ट्रीय पुरस्कार भी स्थापित किया गया है। प्रथम नीरा आर्य पुरस्कार के लिए छत्तीसगढ़ के अभिनेता अखिलेश पांडे का चयन किया गया है।एक भव्य समारोह में अखिलेश पांडे को नीरा आर्य सम्मान दिया गया। नीरा आर्य के जन्मस्थल खेकड़ा, बागपत में साहित्यकार तेजपालसिंह धामा एवं मधु धामा ने मिलकर व्यक्तिगत रूप से 70 लाख रुपए में नीरा आर्य स्मारक की स्थापना की है, जिसमें एक भव्य पुस्तकालय भी है। यहां उनकी प्रतिमा के साथ–साथ 300 से अधिक स्वतंत्रता सेनानियों की जनकारी भी संग्रहित की गई है।

नीरा आर्य का जन्म 5 मार्च 1902 को तत्कालीन संयुक्त प्रांत उत्तरप्रदेश के खेकड़ा नगर में हुआ था।वर्तमान में खेकड़ा भारत के उत्तरप्रदेश राज्य में बागपत जिले का एक शहर हैं। इनके धर्मपिता सेठ छज्जूमल अपने समय के एक प्रतिष्ठित व्यापारी थे, जिनका व्यापार देशभर में फैला हुआ था। खासकर कलकत्ता में इनके मुंह बोले पिताजी के व्यापार का मुख्य केंद्र था, इनके धर्म पिता छज्जूमल ने इनकी प्रारम्भिक शिक्षा का प्रबंध कलकत्ता के निकट भगवानपुर ग्राम में किया था। नीरा के प्रारम्भिक शिक्षक का नाम बनी घोष था, जिन्होंने उन्हें संस्कृत का ज्ञान दिया। बाद की शिक्षा कलकत्ता शहर में हुई। नीरा आर्य हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली के साथ–साथ कई अन्य भाषाओं में भी प्रवीण थीं। इनकी शादी ब्रिटिश भारत के सीआईडी इंस्पेक्टर श्रीकांत जयरंजन दास के संग हुई थी। श्रीकांत जयरंजन दास अंग्रेज भक्त अधिकारी था। ऑफिसर जयरंजन दास को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जासूसी करने और उसे मौत के घाट उतारने की जिम्मेदारी दी गई थी।

इन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जान बचाने के लिए अंग्रेजी सेना में अफसर अपने पति श्रीकांत जयरंजन दास की हत्या कर दी थी अवसर पाकर श्रीकांत जयरंजन दास ने नेताजी को मारने के लिए गोलियां दागी तो वे गोलियां नेताजी के ड्राइवर को जा लगी, लेकिन इस दौरान नीरा आर्य ने श्रीकांत जयरंजन दास के पेट में संगीन घोंपकर उसे परलोक पहुंचा दिया था। श्रीकांत जयरंजन दास नीरा आर्य के पति थे, इसलिए पति को मारने के कारण ही नेताजी ने उन्हें नागिनी कहा था। आजाद हिन्द फौज के समर्पण के बाद इन्हें पति की हत्या के आरोप में काले पानी की सजा हुई थी,जहां इन्हें घोर यातनाएं दी गई। आजादी के बाद इन्होंने फूल बेचकर जीवन यापन किया, लेकिन कोई भी सरकारी सहायता या पेंशन स्वीकार नहीं की।इनके भाई बसंत कुमार भी स्वतंत्रता सेनानी थे, जो आजादी के बाद संन्यासी बन गए थे। आजादी के जंग में अपनी भूमिका पर इन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिखी है। उर्दू लेखिका फरहाना ताज (जो हिन्दी में मधु धामा के नाम से लिखती हैं) को भी इन्होंने अपने जीवन के अनेक प्रसंग सुनाए थे। उन्होंने भी इनके जीवन पर एक उपन्यास लिखा है, जिसमें इनके आजादी की जंग में योगदान को रेखांकित किया गया है।

इनकी आत्मकथा का एक हृदयद्रावक अंश प्रस्तुत है – ''मुझे गिरतार करने के बाद पहले कलकत्ता जेल में भेजा गया। यह घटना कलकत्ता जेल की है, जहां हमारे रहने का स्थान वे ही कोठरियाँ थीं, जिनमें अन्य महिला राजनैतिक अपराधी रही थी अथवा रहती थी। हमें रात के 10 बजे कोठरियों में बंद कर दिया गया और चटाई, कंबल आदि का नाम भी नहीं सुनाई पड़ा।मन में चिंता होती थी कि जहां हमें भेजा जाना था, वहां गहरे समुद्र में अज्ञात द्वीप में रहते स्वतंत्रता कैसे मिलेगी, अभी तो ओढ़ने बिछाने का ध्यान छोड़ने की आवश्यकता आ पड़ी है? जैसे–तैसे जमीन पर ही लोट लगाई और नींद भी आ गई। लगभग 12 बजे एक

पहरेदार दो कम्बल लेकर आया और बिना बोले–चाले ही ऊपर फेंककर चला गया। कंबलों का गिरना और नींद का टूटना भी एक साथ ही हुआ। बुरा तो लगा, परंतु कंबलों को पाकर संतोष भी आ ही गया। अब केवल वही एक लोहे के बंधन का कष्ट और रह–रहकर भारत माता से जुदा होने का ध्यान साथ में था।" सूर्य निकलते ही मुझको खिचड़ी मिली और लुहार भी आ गया। हाथ की सांकल काटते समय थोड़ा–सा चमड़ा भी काटा, परंतु पैरों में से आड़ी बेड़ी काटते समय, केवल दो–तीन बार हथौड़ी से पैरों की हड्डी को जाँचा कि कितनी पुष्ट है। मैंने एक बार दुःखी होकर कहा, ''क्याअंधा है, जो पैर में मारता है?'' ''पैर क्या हम तो दिल में भी मार देंगे, क्या कर लोगी?'' उसने मुझे कहा था। ''बंधन में हूँ तुम्हारे कर भी क्या सकती हूँ...'' फिर मैंने उनके ऊपर थूक दिया था, ''औरतों की इज्जत करना सीखो?'' जेलर भी साथ थे, तो उसने कड़क आवाज में कहा, ''तुम्हें छोड़ दिया जाएगा, यदि तुम बता दोगी कि तुम्हारे नेताजी सुभाष कहाँ हैं?'' ''वे तो हवाई दुर्घटना में चल बसे,'' मैंने जवाब दिया, ''सारी दुनिया जानती है।'' ''नेताजी जिंदा है। ...झूठ बोलती हो तुम कि वे हवाई दुर्घटना में मर गए?'' जेलर ने कहा। ''हाँ नेताजी जिंदा हैं।'' 'तो कहाँ है।'' 'मेरे दिल में जिंदा हैं वे। ''

जैसे ही मैंने कहा तो जेलर को गुस्सा आ गया था और बोले, ''तो तुम्हारे दिल से हम नेताजी को निकाल देंगे।'' और फिर उन्होंने मेरे आँचल पर ही हाथ डाल दिया और मेरी आँगी को फाड़ते हुए फिर लुहार की ओर संकेत किया... लुहार ने एक बड़ा सा जंबूड़ औजार जैसा फुलवारी में इधर–उधर बढ़ी हुई पत्तियाँ काटने के काम आता है, उस ब्रेस्ट रिपर को उठा लिया और मेरे दाएँ स्तन को उसमें दबाकर काटने चला था... लेकिन उसमें धार नहीं थी, ठूँठा था और उरोजों (स्तनों) को दबाकर असहनीय पीड़ा देते हुए, दूसरी तरफ से जेलर ने मेरी गर्दन पकड़ते हुए कहा, ''अगर फिर जबान लड़ाई तो तुम्हारे ये दोनों गुब्बारे छाती से अलग कर दिए जाएँगे...'' उसने फिर चिमटानुमा हथियार मेरी नाक पर मारते हुए कहा, ''शुक्र मानो हमारी महारानी विक्टोरिया का कि इसे आग से नहीं तपाया, आग से तपाया होता तो तुम्हारे दोनों स्तन पूरी तरह उखड़ जाते।''

वैसे तो पवित्र मोहन रॉय आजाद हिंद फौज के गुप्तचर विभाग के अध्यक्ष थे, जिसके अंतर्गत महिलाएं एवं पुरुष दोनों ही गुप्तचर विभाग आते थे। लेकिन नीरा आर्य को आजाद हिंद फौज की प्रथम जासूस होने का गौरव प्राप्त है। नीरा को यह जिम्मेदारी इन्हें स्वयं नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दी थी। अपनी साथी मानवती आर्या सरस्वती राजामणि और दुर्गा मल्ल गोरखा एवं युवक डेनियल कालेसंग इन्होंने नेताजी के लिए अंग्रेजों की जासूसी भी की। जासूसी से संबंधित इनकी आत्मकथा का एक अंश इस प्रकार है : मेरे साथ एक और लड़की थी, सरस्वती राजामणि। वह उम्र में मुझसे छोटी थी, जो मूलतः बर्मा की रहने वाली थी और वहीं जन्मी थी। उसे और मुझे एक बार अंग्रेजी अफसरों की जासूसी का काम सौंपा गया। हम लड़कियों ने लड़कों की वेशभूषा अपना ली और अंग्रेज अफसरों के घरों और मिलिट्री कैम्पों में काम करना शुरू किया। हमने आजाद हिंद फौज के लिए बहुत सूचनाएँ इकट्ठी की। हमारा काम होता था अपने कान खुले रखना, हासिल जानकारी को साथियों से डिस्कस करना, फिर उसे नेताजी तक पहुँचाना। कभी–कभार हमारे हाथ महत्वपूर्ण दस्तावेज भी लग जाया करते थे। जब सारी लड़कियों को जासूसी के लिए भेजा गया था, तब हमें साफ तौर से बताया गया था कि पकड़े जाने पर हमें खुद को गोली मार लेनी है। एक लड़की ऐसा करने से चूक गई और जिंदा गिरतार हो गई। इससे तमाम साथियों और आर्गेनाइजेशन पर खतरा मंडराने लगा। मैंने और राजामणि ने फैसला किया कि हम अपनी साथी को छुड़ा लाएँगी। हमने हिजड़े नृतकी की वेशभूषा की और पहुँच गई उस जगह जहाँ हमारी साथी दुर्गा को बंदी बना के रखा हुआ था। हमने अफसरों को नशीली दवा खिला दी और अपनी साथी को लेकर भागी। यहां तक तो सब ठीक रहा लेकिन भागते वक्त एक दुर्घटना घट ही गई, जो सिपाही पहरे पर थे, उनमें से एक की बंदूक से निकली गोली राजामणि की दाई टांग में धंस गई, खून का फव्वारा छूटा। किसी तरह लंगडाती हुई वो मेरे और दुर्गा के साथ एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ गई। नीचे सर्च ऑपरेशन चलता रहा, जिसकी वजह से तीन दिन तक हमें पेड़ पर ही भूखे–प्यासे रहना पड़ा। तीन दिन बाद ही हमने हिम्मत की और सकुशल अपनी साथी के साथ आजाद हिंद फौज के बेस पर लौट आई। तीन दिन तक टांग में रही गोली ने राजमणि को हमेशा के लिए लंगड़ाहट बख्श दी। राजामणि की इस बहादुरी से नेताजी बहुत खुश हुए और उन्हें आईएनए की रानी झांसी ब्रिगेड में लेटिनेंट का पद दिया और मैं कैप्टन बना दी गई। मैंने एक दिन राजामणि को मजाक में कहा, तू तो लंगडी हो गई, अब तेरे से शादी कौन करेगा? तो बोली,

आजाद हिन्द में हजारों छोरे हैं, उनमें से कोई एक जो जंग में सीने पर और दोनों पैरों पर गोलियां खाएगा और दुश्मनों को ढेर करेगा उसी से कर लूंगी, बराबर की जोड़ी हो जाएगी।, मेरी बोलती बंद!

इन्होंने जीवन के अंतिम दिनों में फूल बेचकर गुजारा किया और फलकनुमा, हैदराबाद में एक झोंपड़ी में रही। अंतिम समय में इनकी झोंपड़ी को भी तोड़ दिया गया था, क्योंकि वह सरकारी जमीन में बनी हुई थी। वृद्धावस्था में बीमारी की हालत में चार मीनार के पास उस्मानिया अस्पताल में इन्होंने रविवार 26 जुलाई, 1998 में एक गरीब, असहाय, निराश्रित, बीमार वृद्धा के रूप में मौत का आलिंगन कर लिया। भारत माता की विवादित पेंटिंग पर एमएफ हुसैन से उलझने वाले हिन्दी दैनिक स्वतंत्र वार्ता के एक पत्रकार तेजपाल सिंह धामा, ने अपने साथियों संग मिलकर उनका अंतिम संस्कार किया।

हम आप सभी के सहयोग से वैदिक सभ्यता संस्कृति संस्कारों को समर्पित रह कर आर्य विरासत को विश्व स्तर बढ़ाने हेतु कृतसंकल्पित हैं, अपनी फसल और नस्ल को संरक्षित कर दिशा देना हम सभी का परम कर्तव्य है, आओ मिल कर आगे बढ़े। 22 मार्च 2025 को लक्ष्मीबाई ब्रिगेड की सेनापति वीरांगना नीरा आर्य की 123वीं जन्म जयंती मनाई गई, जो हर साल 5 मार्च को मनाई जाती है। इस शुभ अवसर परए नीरा आर्य के जीवन और उनके योगदान को याद करते हुए कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस शुभ अवसर पर आयोजन स्थल वीरांगना नीरा आर्य वैदिक क्रीडा व योग शिक्षण संस्थान, महर्षि दयानंद धाम, स्वामी इंद्रवेश योगाश्रम, तपस्वी टीला, नजदीक श्री गंगा घाट, नीरा आर्य को याद किया गया सार शुक्रताल, मुज्जफरनगर नीरा आर्य को याद किया गया और (1) चतुर्वेदीय महापरायण यज्ञ सुबह 9.00 बजे से 10.30 बजे तक। (2)' बुद्धिजीवी महासम्मेलन (वीरांगना नीरा आर्य स्मृति व्याख्यान) संकल्प सभा में पारित प्रस्ताव पर चर्चा निष्कर्ष व भोजन प्रसादी समय तक 10.30 से 1.00 बजे तक बरताया गया। (3) नीरा आर्य जीवनचरित्र से जुड़ी ऐतिहासिक हिंदी फीचर फिल्म 'आर्य पुत्री' के प्रीमियर शो का निःशुल्क आयोजन दोपहर 1 बजे से 2.30 बजे के बीच किया जा रहा है, सीटें सीमित हैं, प्रवेश पहले आओ पहले पाओ के आधार पर गणमान्य विभूतियों की सीमित संख्या उपस्थिति में। (4) होनहार उदयीमान बाल खिलाड़ियों द्वारा योग का भव्य प्रदर्शन मलखंभ, रस्सी मलखंभ, विशेष योग आसनों की प्रस्तुति 2.30से 3.00 बजे तक देशभक्ति पर आधारित कवि सम्मेलन समय शाम 3 बजे से 5 बजे तक। (5) गंगा स्नान व नौका विहार शाम 5 बजे सम्मेलन मुख्य विषय व उद्देश्यः समाज की दशा और दिशा पर मंथन और आगामी रूपरेखा बना कार्य करना। वीरांगना नीरा आर्य वैदिक क्रीड़ा व योग शिक्षण संस्थान (गुरुकुलम) की स्थापना संबंधी प्रगति कार्य व विकास कार्य की समीक्षा की गई। ऐसी महान देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी, साहसी एवं स्वाभिमानी महिला को मेरा शत्–शत् नमनः।

कहाँ खो गये वे गाँव ?

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

ग्रामीण परिवेश के लेखन में रुचि होने के कारण मैं खाप – खेडा – खेत की धनाढ्य विरासत का कायल हूँ। खेडा यानी राम–गाम। मैं अपने आपको अपने गाँव से आज भी अन्तःकरण से जुडा पाता हूं। यह आत्मलगाव है। अक्सर मैं गाँव के गौरे, बणी व जौहड को याद करके गहन मथन में लंबे काल तक चला जाता हूँ। सम्भवतः दस हजार वर्ष पूर्वकी बात है, इस विशाल हरियाणा अर्थात् 'सप्त–सैन्धव' में एक नई संस्कृति का उद्य हो रहा था। यह ग्राम्य संस्कृति थी, जो आर्य और द्रविड सभ्यताओं के सुन्दर – संगम से निखर– संवर रही थी। निःसन्देह गांव की संस्कृति, गाँव की मर्यादाएँ, गाँव की सौहार्द ही असली भारत की पहचान करवाती है। शायद इसीलिए कि भारत गाँवो में बसता है। खेतो–खलियाना में बसता है। मगर, ऐसा लगता है कि आज इन बातो की चर्चा करने से कतराने लगे हैं लोग। कतराएं भी क्यो नहीं? भला, गर्मागर्म राजनीति, अजगरी भ्रष्टाचार धर्मान्ध प्रवृति, आर्थिक विषमता आदि को छोड़कर गावों की चर्चा करे तो कैसे करें ?

वैसे भी अब कहाँ बचे हैं वे गांव ? जाने कहाँ खो गये हैं वे गांव ? कहां मिट गया वह गावो का स्वरूप। सब कुछ तो बदल गया है, इस बदलाव, इस परिवर्तन का आभास होने लगता है गाँव की सीमा में कदम रखते ही। इस बदलाव को गत दिनों गांव जाने पर मैंने भी महसूसा। सब कुछ बदला–बदला, अजीब सा लगा। इस बदलाव को देखकर

एक बारगी तो कदम डगमगा से गये। फलतः जब मैं गांम के गोरे में पहुंचा तो वहां नीरसता महसूस हुई – न वहां बालू रेत था और न ही वहां जाल का खोड था। मेरा मन अतीत की स्मृतियों को टटोलने लगा। स्मृतियों का यह बेलगाम घोड़ा जाने कहां–की की सैर कराने लगा मुझे। बचपन के दिनों के दृश्य रह–रहकर आंखों में तैरने लगे। खोड पर 'काई–डंडा' खेलने और बालू रेत में कबड्डी खेलने की यादे ने मुझे हिला दिया – 'जब गौरा ही ने मुझे घर तक जाने में बड़ी बाधा पहुचाई घर के अन्दर पैर रखे तो फिर माथा ठनका। घर के करंजो में बसेरा करने वाली चिड़ियां गायब थी। चिडियाओं की चहचाहट करने वाली आवाज न सुनने से मुझे घर में सन्नटा पाया। बेबस! अतीत को फिर से मैं कैसे वापस लाऊ ? मैं ये सोच ही रहा था कि दूर से रेडियों पर बजने वाले इस फिल्मी गीत की अनुगूंज सुनाई दी।

"जाने कहाँ गये वो दिन, कहते थे तेरी याद में।
पलको को हम बिछायेगे।"

सचमुच आज उन मधुर यादों की राह में पलके बिछाने को दिल करता हैं। काश! मेरी तरह अन्य ग्रामीणों की वे अनुभूतियां, वे संवेदनाए, वे राग–रंग वो सौहार्द टूटने से बच सके।

आज हम गांव–भाव, गांव–पन, गांव का सद्भाव, गांव का पर्यावरण त्याग कर नगर भाव को गले लगा चुके हैं। शहरी चकाचौंध में गांव जाने कहाँ खो गये हैं? अतएव मेरा मन बर्रबस कह उठा– "ये शहर तमन्ना अमीरो की दुनियां। वहां सुख मुझे दो जहां का मिला है, मेरा गांव जाने कहाँ खो गया है ?"

गांव के गौरे के जाल के खोड के पेड भी लुप्त होने की पीढ़ा मेरी तुछ हो जाती है जब मैं गांव की विशालकाय बणी जहां पीपल–वट, नीम, जाल, जांटी के वृक्ष आदि पेड लुप्त हुये पाता हूं। वणी का लुप्त होना गांव का चीरहरण ही तो है। गतिमान लम्बी–चौड़ी बणी–पंख, पंखेरूओं का बसेरा, डांगर–ढोर का क्लबहाऊस दर्दनाक दास्तान है।

जब मैं गांव से वापिस गुरूग्राम लौटा तो मन में बड़ी उदासी थी। मेरे गांव की बनी में हजारों जाल के पेड़ थे। वैशाख में पड़ने वाली गर्मियों की छुटियां में जाले रंग–बिरगी मधुर पीहलो से लदपद होकर प्रकृति का अद्भुत उपहार हमें देने के लिए प्रतीक्षा करती थी। सिन्डोरियां लेकर सारे युवा बणी में पहुच जाते थे – प्रकृति को धन्यवाद देने हेतु गांव में यह जमावड़ा एक पीहलमेलानुमा होता था। खूब पीहल खाते और सिन्डोरिया भरकर पीहलघर में लाते थे। मेरे मन में इस दृश्य के भाव प्रवाहित हो रहे थे अगर मुझे लगा कि कोई किलकारी देकर बुलावा दे रहा है – पीहलमइयां की आवाज ही तो वह थी जिस मइयां की गोद में सारा बचपन बीता। हमारे गांव में अब एक भी जाल का पेड नहीं, जालों की स्मृति में क्या मैं मन्दिर बनवाऊं ? नही, मइयां मुझे चेता रही है – "जाल सरंक्षण अभियान चलाओ – जाल उत्सव मनाओं।" जाल को कैसे जीवित करू ? यह दायित्व भार मेरे ऊपर आ गया है। अनेक लोगो से जाल पेड़ के बारे में अब बाते करता हूं। शहरी कान्वेंट स्कूलो की हवा खाये बच्चों को स्कूल में चुकलीप्टस (सफेदा) के लम्बे लम्बे वृक्ष ही दिखाई देते हैं, उनसे तो जाल पेड के बारे में क्या बात करें ? भिवानी, महेन्द्रगढ़ जिला के कुछ गांवों में जाल पेड़, अन्तिम सांसे ले रहे हैं। वहां जाने के लिए आतुर हो तथा जालपेड सरंक्षण अभियान का श्रीगणेश करें।

घरेलू चिड़ियां और जाल के पेड़ से मेरा गहरा जुड़ाव हैं। अपने मकान के पिछले आगंन में हम प्रभात में ही एक बर्तन में ताजी रोटियों के अंश रख देते हैं, वहां चिड़िया आती हैं और मैं अपने बैडरूम के जाली के दरवाजे से दृश्य को देखकर आत्मविभोर हो जाता हूं। मेरा चिड़ियों से जो रिश्ता बचपन में बना था वह आज भी बरकरार हैं। जालपेड के साथ अपना कैसे आज बचपन के बालूरेत तथा जालपेड ने मेरे बचपन को संवारा, निखारा तथा हैल्दी बनाया, ये प्रकृति के अनुपम उपहार आज की पीढ़ी का नसीब नहीं हैं। सामाजिक वैज्ञानिक तो इसे 'Paradise Lost' कहकर अति संवेदनशील हो जाती हैं।

ग्रामीण सभ्यता की प्रकृति संरक्षक रही है। वृक्ष सम्पदा ग्रामीणों को प्रकृति का अनुपम उपहार था। वृक्षों झूण्ड़ो ने गांवों को अमूल्य स्वास्थयवर्धक वातावरण दिया। खेतो तथा गांवों के बीच वणी ने स्वास्थय लाभ हेतु पशु–पक्षियों को विहार हेतु खुली जगह दी ताकि मानव व अन्य प्राणियों के बीच स्थायी संतुलित समन्यव बना रहे। अब इस संतुलित समन्यवय बना रहे। अब इस संतुलित समन्यवय पर बढ़ते शहरीकरण ने कठोर प्रहार कर दिये हैं। गांवों का वजूद संकट में आ गया है। यदि गांव न रहे तो भारत भी न रहेगा अतएव। हम मिलकर ग्रामीण सभ्यता को बचाये।

जाट उत्पत्ति के कुछ संदर्भ

– डॉ० राजेन्द्र कुमार (मो० 989782175)

जाट उत्पत्ति के संदर्भ में आनुवंशिक तथा अन्य खोजों से स्पष्ट हो गया है कि शक लोग ही मुख्यतः उनके पूर्वज थे, हालांकि आगे चलकर उनमें भारत में रहने वाले उन जैसे या बाहर से आने वाले अन्य समूह भी मिल गये, जैसा उनके गोत्रों के अध्ययन से पता चलता है। जाटों की शक उत्पत्ति का सिद्धान्त नई बात नहीं है। भारत में जनसंख्या की दृष्टि से जाट कोई बड़ा समूह नहीं है और न सारे भारत में बसा हुआ है, इसके बावजूद उसने हमेशा देशी–विदेशी इतिहासकारों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत में सेवारत यूरोपीय नृवंशविज्ञानियों का ध्यान इस समुदाय की ओर आकर्षित हुआ, क्योंकि उन्हें जाटों की उत्पत्ति की परम्परागत कथाएँ ठीक नहीं लगी थीं। इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने वालों ने इस धारणा को जन्म दिया कि जाट प्राचीन शक जातियों के वंशज हैं। परम्परागत इतिहासकारों ने उनके इस विचार को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि शक लोग विदेशी आक्रमणकारी थे, चीनी मूल के थे और आर्यों से अलग थे, जबकि जाट आर्यों की सन्तान हैं। इस सिद्धान्त का ट्रम्प और बीम्स, सी. वी. वैद्य, सत्यकेतु विद्यालंकार, ग्रियर्सन, मिलर, नैसफील्ड, कालिका रंजन कानूनगो, ठाकुर देशराज, योगेन्द्रपाल शास्त्री, आर. जी. भण्डारकर, और राम पाण्डे जैसे प्रमुख इतिहासकारों ने समर्थन किया। जाटों को सबसे पहले शक–गेटियों के साथ पहचानने वाले विद्वान पादरी फादर मोंसेरात (1536–1600) थे, जो अकबर के दरबार में जेसुइट थे। इस सिद्धान्त के अगले प्रतिपादक जेम्स टॉड, अलेक्जेंडर कनिंघम और विन्सेंट स्मिथ थे, जबकि बालफोर, इबेटसन, एलफिंस्टन, बिंगले, बैडेन पावेल, इलियट, जैक्सन, वैडेल, कैम्पबैल, हेविट आदि उनके वफादार अनुयायी थे और जिन लोगों को हम पुनरुत्थानवादी कह सकते हैं, उनमें आर्नल्ड टॉयन्बी, कैल्विन केफार्ट, उजागर सिंह माहिल, सत्यश्रवा, बी. एस. दहिया और हुकम सिंह पंवार आदि हैं। 1925 में अपनी ऐतिहासिक कृति 'हिस्ट्री ऑफ जाट्स' लिखने के समय कालिकारंजन कानूनगो शक उत्पत्ति के सिद्धान्त के मुख्य आलोचक थे, लेकिन अन्ततः 'हिस्टोरिकल एसेज' (1960) लिखकर वे भी उनमें शामिल हो गये, और उन्होंने जाटों को कुषाणों का वंशज बताकर इलियट, जैक्सन और कैम्पबैल का समर्थन किया। (देखें, हिस्टोरिकल एसेज, दूसरा संस्करण, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं., आगरा, 1968, पृ. 77)

भारत को यदि एक आनुवंशिक वन कहा जाये तो अत्युक्ति न होगा, क्योंकि यहाँ चौथी शताब्दी ईसापूर्व से सातवीं शताब्दी ईस्वी के बीच यूनानी और मध्य एशियाई खानाबदोश जातीय समूहों के लोगों का आव्रजन होता रहा और उनमें से अनेक न केवल यहीं बस गये बल्कि यहाँ के समाज में पूरी तरह समा गये। इनमें यूनानी, शक, कुषाण, पार्थियन और बाद में हूण, अफगान, अरब, ईरानी, तुर्क, मंगोल, पारसी, यहूदी, सीरियाई आदि शामिल रहे हैं। ये सब अपने साथ भिन्न–भिन्न प्रकार की संस्कृतियाँ लाये। यूरोप और यहाँ तक कि अमरीका का सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन भी मध्य एशिया के प्रभाव स्वरूप विकसित हुआ, जहाँ से शक लोग आये थे। उदाहरण स्वरूप, जंगली जानवरों को अपने उपयोग के अधीन करना मानव सभ्यता के महत्वपूर्ण कारकों में से एक रहा है। हम जानते हैं कि जंगली घोड़े को सबसे पहले मध्य एशिया के मैदानों में पालतू बनाया गया था, और वहीं से सबसे तेज दौड़ने के लिए दुनिया के अन्य भागों में "घोड़ा संस्कृति" का प्रसार हुआ। धीरे–धीरे घोड़ों से जुड़ी कई वस्तुएँ– काठी, लगाम और बाद में रकाब की उत्पत्ति मध्य एशिया में हुई। इससे भी अधिक दिलचस्प बात है कि मध्य एशिया ने कपड़ों पर, विशेष रूप से मर्दाना पोशाक पर प्रभाव डाला। घुड़सवारी को अपनाने के कारण मध्य एशिया के निवासियों को ढीले कपड़े त्यागने के लिए मजबूर होना पड़ा जो आरम्भ में लगभग सार्वभौमिक थे और उस कसे हुए कपड़े को विकसित करना पड़ा, जिसे पाजामा कहते हैं। सदियों तक पाजामा पहनना केवल मध्य एशिया के निवासियों तक ही सीमित था, लेकिन समय के साथ, जैसे–जैसे घुड़सवारी का प्रचलन हुआ, इसका रिवाज दुनिया के सभी भागों में फैल गया। (विलियम मोंटगोमरी मैकगवर्न द अर्ली एम्पायर्स ऑफ सेन्ट्रल एशिया : ए स्टडी ऑफ द सीथियन्स, एण्ड द हून्स एण्ड द पार्ट दे प्लेड इन वर्ल्ड हिस्ट्री, द युनिवर्सिटी ऑफ कैरोलिना प्रेस, 1939, पृ. 2) यही बात जूतों (बूटों) के साथ जुड़ी हुई है, जिन्होंने धीरे–धीरे उन

चप्पलों और सैण्डलों की जगह ले ली जो सारी दुनिया में पहने जाते थे। आरम्भ में ये जूते चमड़े या नमदे के बनते थे, इसके लिए नमदा बनाने की कला भी मध्य एशिया में विकसित हुई। जूतों पर एड़ी लगाने का रिवाज भी मध्य एशिया से ही फैला। जाटों में घुटनों तक की कसी हुई धोती और चमड़े की देशी जूती इसी संस्कृति का हिस्सा हैं। पहले जमाने में ब्राह्मणवर्ग की पूर्वाग्रहग्रस्त अवैज्ञानिक मान्यताओं के कारण हमें मध्य एशिया के निवासियों को मूलतः बर्बर समझने की आदत हो गयी है, इस कारण जाटों को अपने मूल समुदाय से, जो मध्य एशिया से ही आया था, बचने और उसे नकारने की आदत पड़ गयी। इसका दूसरा कारण मध्य काल में इस्लाम के उद्‌भव और उसकी आक्रामकता भी था, जिसके फलस्वरूप किसी अन्य क्षेत्र ने कभी भी इस प्रकार के दर्दनाक परिवर्तनों का अनुभव और इतनी आवृत्ति के साथ नहीं किया, जितना उत्तर–पश्चिम भारत ने। आक्रमणों की संख्या और आवृत्ति इतनी विशाल थी और उसने नये जीनों से परिचय और प्रसार पर इतना अधिक प्रभाव डाला कि आक्रमणों को जीन आक्रमण कहना अत्युक्ति न होगा। हाल की पुरातात्विक खोजों से इस तथ्य की स्थापना हुई है कि मध्य एशिया के प्राचीन निवासियों ने, जिनमें जाटों के पूर्वज भी शामिल थे, एक उच्च्य सांस्कृतिक और कलात्मक परम्परा विकसित की थी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात है कि अब विद्वान यह सिद्ध करने में सक्षम हो गये हैं कि इस प्रारम्भिक मध्य एशियाई संस्कृति और कला ने सुदूर पूर्व, दक्षिण एशिया तथा यूरोप के कलात्मक विकास पर महसूस करने योग्य प्रभाव डाला था। इस प्रकार संस्कृति के इतिहास में मध्य एशिया का मूल योगदान दूरगामी रहा है।

भारतीय इतिहासकारों का एक बड़ा समूह संस्कृत महाकाव्यों और ऋग्वेद से ही भारतीय लिखित इतिहास को जोड़ता है। उनका बल दो–तीन बातों पर अधिक है। पहला, भारत एक 'हिन्दू' सांस्कृतिक राष्ट्र है। उसकी आत्मा धर्मप्रधान है। दूसरे, सिंधु सभ्यता मूल सैंधव सभ्यता नहीं थी, अपितु वह सरस्वती सभ्यता थी। उसी का विस्तार मेहरगढ़ (बलूचिस्तान) तक में था। तीसरे, राखीगढ़ी में अब जो नई खुदाइयाँ हुई हैं, उसने सरस्वती सभ्यता का काल सिंधु सभ्यता के तीन हजार ईसापूर्व के बजाय, सात हजार साल ईसापूर्व तक धकेल दिया है। अतएव अब भारतीय वैदिक आर्यों किंवा ब्राह्मणों की सरस्वती सभ्यता अथवा आर्य सभ्यता नील नदी और बैबीलोन की सभ्यताओं से कहीं अधिक पुरानी प्रतीत होने लगी हैं। इसके संदर्भ में डा. धर्मचन्द्र विद्यालंकार का मत अधिक समीचीन है कि 1920–21 तक जो खुदाई हड़प्पा में हुई थी, यह वही सैन्धव क्षेत्र था जिसका विस्तार पश्चिमोत्तरी भारत (पाकिस्तानी पंजाब और बलूचिस्तान) से पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रों की ओर मिला था जो पश्चिमी एशिया के ईरानी सीस्तान से लेकर अलबुर्ज पर्वतमाला तक फैला था। जिसे आजकल सरस्वती सभ्यता कहा जा रहा है, उसके जो अवशेष भारत के वर्तमान 'हिन्दूबहुल क्षेत्र' पंजाब में रोपड़, हरियाणा में राखीगढ़ी, बनावली, फरमाना, मिलकपुर, उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर, गुजरात में धौलावीरा, लोथल, सूरकोटड़ा, राजस्थान में कालीबंगन आदि में मिले बताये जाते हैं, वे भी हड़प्पा सभ्यता के ही हैं। सरस्वती नदी हरयाणा की घग्घर या हकरा थी, जो वर्तमान हरियाणा–राजस्थान से चलकर पाकिस्तान के बहावलपुर में सिंधु महानद में गिरती थी, बाद में कालीबंगा में मरुस्थल में विलुप्त हो गयी, जहाँ आज भी उसका विलोपन स्थल विद्यमान है। (डा. धर्मचन्द्र विद्यालंकार प्राचीन राजवंश और जाट, पृ. 74–75) विद्यालंकार का यह भी कहना है कि यह सब आर्यों को भारत के मूल अधिवासी सिद्ध करने के लिए हो रहा है, क्योंकि ऋग्वेद सहित सम्पूर्ण प्राचीन संस्कृत साहित्य आर्य और अनार्य जनजातियों के नामों से भरा पड़ा है, जबकि सिद्ध हो चुका है कि आर्य कोई जाति नहीं थी, बल्कि एक सांस्कृतिक संज्ञा थी जबकि सिंधु सभ्यता एक साक्षर नागर सभ्यता थी और तथाकथित आर्य तब तक पशुचारी ही थे, अर्थात उससे पिछड़े हुए थे। इसके बाद आने वाले मध्य एशियाई शक और कुषाण आदि भी आर्य ही थे, जिन्होंने कृषि में भारी विस्तार किया।

मूल वैदिक लोग एकेश्वरवादी और निर्गुणवादी थे, न कि मूर्तिपूजक और बहुदेववादी। न ही वे बाद के काल में जोड़ी गयी जन्मजात विभेदमूलक वर्ण–व्यवस्था या जाति–व्यवस्था के कायल थे। (विद्यालंकार, पृ. 78–79) जाट लम्बे समय से श्रेष्ठ कृषि–उत्पादक और राष्ट्ररक्षक सैनिकों के रूप में भारत के विशाल भूखण्ड पर निवास करते हैं। ज्ञात काल से इन प्रगतिशील लोगों का इतिहास साहस, वीरता, उद्यमशीलता, राष्ट्रीय चरित्र तथा देशप्रेम का अनुपम उदाहरण रहा है। इस समुदाय के लोग उत्तर में हिमालय पर्वत की तराई, पश्चिम में सिंधु नदी का पूर्वी किनारा,

दक्षिण में सिंध, कच्छ काठियावाड़ से भोपाल तक और पूर्व में गंगा–यमुना के दोआब, रुहेलखण्ड आदि के बीच आबाद हैं। सिंधु नदी के पश्चिम में ये पेशावर, बिलोचिस्तान तथा सुलेमान पहाड़ियों के पार तक फैले हुए हैं। किरमान और इराक में जाट तथा जिप्सियों की बड़ी आबादी है। सिंधु नदी के दोनों ओर आबाद जिले और मुलतान के चारों ओर मिले–जुले जाट बलूचियों में प्रायः सामाजिक संसर्ग और रक्त एकता विद्यमान है। अफगानिस्तान और उसके पश्चिम तथा पाकिस्तान में ये मुसलमान हैं, पंजाब में ये सिख हैं और राजस्थान, मध्य भारत, दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में ये खेतिहर हिन्दू हैं, जहाँ कहीं–कहीं इन्होंने इस्लाम भी ग्रहण किया हुआ है।

मानवतत्व रचना अथवा शारीरिक गठन, प्रकृत स्वभाव, भाषा, सामाजिक रहन–सहन, रीति–रिवाज, आचार–विचार, धार्मिक विश्वास, प्रबंधकीय पटुता, राजनैतिक विकास और प्रगतिशील कारकों पर विचार किये बिना केवल शब्द साम्य, ध्वनि–साम्य, साहसिक प्रवृत्ति और अपने पौराणिक पूर्वाग्रहों को आगे करते हुए आमतौर पर इन्हें आर्य तथा वैदिक संस्कृति से जोड़ कर 'भारत में निर्मित' दिखाने की कल्पना की है।

पुअर पेशेंट्स के फ्री इलाज को लेकर हाईकोर्ट की फटकार के बाद

पीजीआई में पुअर फ्री के डॉक्यूमेंट्स हों न हों, फ्री इलाज पहले दिन से, फंड में हैं ढाई करोड़

हाईकोर्ट की फटकार के बाद पीजीआई ने अपने पुअर पेशेंट वेलफेयर फंड के इस्तेमाल को लेकर कुछ बदलाव किए हैं, जिससे ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंद मरीजों को इसका फायदा मिल सके। सबसे अहम है– इमरजेंसी में आने वाले मरीज को "जीरो डे" यानी उसी दिन तुरंत मुफ्त इलाज मुहैया करवाया जाए। मरीजों की स्थिति देखते हुए पहले इलाज शुरू करना होगा, भले पुअर फ्री से संबंधित डॉक्यूमेंट्स हों या न हों। हर एचओडी को सर्कुलर जारी किए गए हैं। जिन मरीजों के पास बीपीएल कार्ड नहीं हैं, उन्हें पुअर फ्री वेलफेयर फंड का लाभ देने के लिए एचओडी, प्रोफेसर, कंसल्टेंट को पावर दी गई है। वही मरीज का असेसमेंट कर तुरंत इस फंड का लाभ दे सकेंगे। इमरजेंसी में एसएमओ को पावर दी है कि मरीज को बिना किसी डॉक्यूमेंट के इलाज जूनियर रेजिम भी मरीज की हालत को देखते हुए उसे मुफ्त इलाज मुहैया करवा सकेंगे। इसी मसले को लेकर दिव्या शर्मा ने हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर कर कहा था कि मरीजों को इस फंड से मदद मिलने में दिक्कत आ रही है। हाईकोर्ट ने पीजीआई को व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए थे। पीजीआई में गरीब मरीजों की मदद के लिए पुअर पेशेंट वेलफेयर फंड बना हुआ। वर्ष 2023–24 में इस फंड में 4.80 करोड़ रुपए आए, जिसमें से 5402 मरीजों पर 3.24 करोड़ रुपए खर्च हुए।

पीजीआई के पुअर फ्री वेलफेयर फंड में इस समय 2.50 करोड़ रुपए हैं। इसके अलावा करीब 12 करोड़ रुपए की एफडी है, जिसके ब्याज से मरीजों का मुफ्त इलाज किया जा रहा है। जो भी बिलो पॉवर्टी लाइन इनकम सर्टिफिकेट, अंत्योदय राशन कार्ड होल्डर को इस सुविधा का लाभ मिल सकता है। यह मरीज किसी भी राज्य का हो सकता है। इसमें यह भी है कि अगर किसी मरीज का आयुष्मान कार्ड या किसी राज्य सरकार की योजना का लाभार्थी है तो उसे इस सुविधा का लाभयोजना के तहत ही मिलेगा।

छोटे कदमः बड़ा असर......

पीजीआई ने हर डिपार्टमेंट के बाहर लगाने के लिए साइन बोर्ड बनवाए हैं। ये सोमवार से लगेंगे। साइन बोर्ड पर यह भी लिखा है कि दिक्कत हो तो पुअर फ्री वेलफेयर फंड सेल से बात करें।

24X7 टोल फ्री नंबर 0172–2756006

- पैरा मेडिकल स्टाफ को भी अवेयर किया जा रहा है। उन्हें भी पता हो कि जरूरतमंद मरीजों के लिए इस तरह का फंड है और वह इलाज मुहैया करा सकें।
- नए आने वाले रेजिडेंट डॉक्टर्स के लिए इसी विषय पर हफ्ते में एक दिन ट्रेनिंग प्रोग्राम।
- भीड़ में खड़े अनजान मरीजों को भी जल्दी इलाज मिल सके इसके लिए हॉस्पिटल अटेंडेंट्स को हिदायत दी गई है कि वह संबंधित मरीज की जानकारी तुरंत डॉक्टर को दें।

पहले......

1. डॉक्यूमेंट जैसे बीपीएल कार्ड, अंत्योदय या राशन कार्ड के बगैर पुअर फ्री में इलाज शुरू नहीं होता था।
2. पुअर फ्री के तहत इलाज की मंजूरी देने की पावर पहले सिर्फ एचओडी के पास थी। एचओडी बगैर

डॉक्यमेंट के नहीं देते थे, क्योंकि उनसे भी सवाल होते थे कि किस आधार पर मंजूरी दी।

3. इमरजेंसी में एसएमओ के पास पुअर फ्री के तहत इलाज की मंजूरी देने की पावर नहीं थी।

अब......

1. मरीज जरूरतमंद है और डॉक्यूमेंट नहीं है, तो भी तुरंत इलाज शुरू करना होगा।
2. पुअर फ्री वैलफेयर फंड के तहत इलाज की मंजूरी देने की पावर अब प्रोफेसर, कंस्लटेंट सीनियर रेजिडेंट को भी पावर दे दी गई है। इन सबको इस योजना के बारे में अवेयर किया जा रहा है।
3. इमरजेंसी में अब एसएमओ भी पुअर फ्री के तहत इलाज की मंजूरी दे सकेंगे।

ज्यादा से ज्यादा मरीजों को पुअर फ्री वेलफेयर फंड का लाभ मिले इसके लिए सभी एचओडी को लिखा है कि जरूरतमंदों तक इस फंड का लाभ पहुंचाया जाए। हम डिपार्टमेंट के बाहर साइन बोर्ड भी लगा रहे हैं।

– पीजीआई प्रवक्ता

पीजीआई में स्किन, डायबिटीज के मरीजों के लिए डिजी सेवा शुरू

पीजीआई में आने वाले फॉलोअप मरीजों को अब डॉक्टर को दिखाने के लिए घंटों लाइन में नहीं लगना पड़ेगा। शनिवार को पीजीआई के डायरेक्टर प्रो. विवेक लाल और डिप्टी डायरेक्टर पंकज राय ने डिजी सेवा शुरू की। पंकज राय ने बताया कि इस सुविधा को शुरू करने का उद्देश्य मरीजों को लाइनों घंटे खड़े होने से बचाना है। उन्होंने बताया कि इस सेवा के जरिए मरीजों को रजिस्ट्रेशन कराने में सुविधा होगी। इसके अलावा फॉलोअप के लिए आने वाले मरीजों को अभी रजिस्ट्रेशन करवाने में चार घंटे का वक्त लगता है। लेकिन डीजी सेवा के तहत अब मरीजों को कार्ड पर एंट्री के लिए डेडिकेटेड विंडो खोली गई है। उन्होंने बताया कि एडवांस आई सेंटर और हेपेटोलाजी डिपार्टमेंट में ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की सुविधा शुरू की गई थी। उन्होंने बताया कि शनिवार से डिजी सेवा के तहत इंडोक्राइनोलॉजी, स्किन और ऑर्थो डिपार्टमेंट में यह सुविधा शुरू की गई है।

पंकज राय ने बताया कि अभी मरीज इन डिपार्टमेंट में दिखाने के लिए आते हैं तो डॉक्टर उन्हें 15 दिन बाद दिखाने आने के लिए कार्ड पर लिखकर देते हैं। जब वे दोबारा दिखाने आते हैं, तो उन्हें कार्ड पर एंट्री कराने के लिए दोबारा घंटों लाइन में लगना पड़ता है। लेकिन इन डिपार्टमेंट में दिखाने आने वाले मरीजों के लिए डेडिकेटेड विंडो बनाई गई है। यहां पर एंट्री करवाने के बाद मरीज सीधे डॉक्टर के पास जा सकेंगे। इससे मरीज का लाइन में तीन–चार घंटे वक्त बचेगा।

देश के ऊपर ज्यान झोंक दी लिख चिठी मैं गेर दियो

– मेहर सिंह

साथ रहणियां संग के साथी दया मेरे पै फेर दियो
देश के उपर ज्यान झोंक दी लिख चिठी मैं गेर दियो।टेक

सब तै पहलम मेरे मात पिता नै चरणां मैं प्रणाम लिखो
चाचा ताऊ बड़े बड़ों नै मेरी दुआ सलाम लिखो
साथ रहणियां संग के साथी सब को राम राम लिखो
मां के जाए भाईयां नै मेरा ऐक जरूरी काम लिखो
जिस रस्ते मेरी अर्थी जा उस रस्ते फूल बिखेर दियो।

मेरी लाजवन्ती कै धोरै लिख दो नहीं फिकर में गात करै
कोण किसै की गैल्यां आया कोण किसै का साथ करै
एक दिन सब नै जाणा होगा कदे चिन्ता दिन रात करै
या तै ईज्जत म्हारी रै करें मामुली सी बात करै
जिस की गैल्यां खाई खेली वा छोड़ सज्जन की मेर दियो।

अपणे दिल मैं, जिन्दा सोचौ कदे खान दान मैं टुक होज्या
छोटी छोटी दो मूरत सैं कदे बालक पण मैं दुःख होज्या
पाल पोस कै बड़े करै तै जिन्दगी भर का सुख होज्या
जवान अवस्था बाप की तरियां देश धर्म मैं रूख होज्या
जै बाप का बदला लेणा हो तै उचे सुर मैं टेर दियो।

हाथ जोड़ कै कैह रहा सूं मेरा इतणा कहण पुगाईयो
जाट के घर मैं जन्म लिया मत उल्टा कदम हटाईयो
जिस जननी का दूध पिया मत रण मैं आण लजाईयो
भारत मां की सेवा कर कै देश की ज्यान बचाईयो
कैह जाट मेहर सिंह रण मैं जा कै कर दुश्मन का ढेर दियो।

जाट हित सबसे ऊपर

– धनखड़, नोएडा, रोहतक

जाट होकर जाट का,
आप सभी सम्मान करो!
सभी जाट एक हमारे,
मत उसका नुकसान करो!

चाहे जाट कोई भी हो,
मत उसका अपमान करो!
जो गरीब हो, अपना धन देकर धनवान करो!
हो गरीब जाट की बेटी,
मिलकर कन्या के लिए दान करो!

अगर लड़े चुनाव “जाट”,
शत प्रतिशत मतदान करो!
हो बीमार कोई भी जाट,
उसे रक्त का दान करो!

बिन घर के कोई मिले जाट, उसका खड़ा मकान करो
अगर जाट की हो फाईल, शीघ्र काम श्रीमान करो!

जाट की लटकी हो राशि,
शीघ्र आप भुगतान करो!
अगर मुसीबत में हो जाट,
फौरन मदद का काम करो

अगर जाट दिखे उदास,
खुश करने का काम करो!
अगर जाट घर पर आए,
जय जाट राज बोलकर सम्मान करो!

अपने से बड़ा जाट,
उसको आप प्रणाम करो!
हे जाट का बेटा,
उसकी मदद तमाम करो!
बेटा हो गरीब जाट का पढ़ता,
कापी पुस्तक दान करो!

जय जाट कौम जाट बलवान जय भगवान

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 31.05.98) 26è5'1" B. Tech. (CSE). Working as Software Engineer in MNC, work from home Chandigarh. Father businessman. Mother housewife. Younger sister doing masters in London & brother B.Tech. from Chitkara University. Avoid Gotras: Jakhar, Mann, Kulhar. Cont.: 8146666411*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1999) 26è5'1" B. A. Statistics, M.A. Economics. Employed as DEO in CTU Chandigarh on contract basis. Income Rs. 3.60 lakh per year. Avoid Gotras: Bamal, Malik, Kaliraman Cont.: 9815109960*
- *SM4 Jat Girl 25è5'2" B. A. Pursuing M.A. Father ASI in Punjab Police. Mother housewife. Own house at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Mann, Malik. Cont.: 9417630054*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.02.92) 33è5'3" M.A. B.Ed. Working as teacher in private school at Mohali. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258*
- *SM4 Jat Girl (DOB 22.07.90) 34è5'5" B. Com, M. Com from Punjab University Chandigarh. Digital marketing from Accenture U. K. Statistics leading innovation from Deakin & Conventry University Australia. Father retired Senior Civil Engineer from CPWD. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Mitharwal, Dhillon. Cont.: 9416337945*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1995) 29è5'3" BAMS, MD Pediatrics. NTET passed. Required match Doctor, Professor, Lecturer. Avoid Gotras: Kharb, Siwach, Malik. Cont.: 9464177315*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.01.98) 27è5'4" B.Com from Punjab University. Employed as Air Hostess in Indigo. Salary Rs. Ninety thousand per month. Father serving in Indian Air Force as JWO. Own house in Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Ravish, Mor, Ghanghas. Cont.: 9914092495*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.03.97) 27è5'1" B.Sc. Math (Hons.), from Delhi University, M.Sc. Statistics from M.D.U. Working as Software Test Automation Engineer Deloitte Banglore. Salary Rs. 11.6 LPA. Father JWO in Indian Air Force. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dalal, Gahlout, Dhochak. Cont.: 9790899428*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1990) 34è5'7" Convent educated. Employed at Chandigarh in reputed I. B. school. Well educated family. Preferred tricity match. Avoid Gotras: Sura, Malik. Cont.: 8360187212*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.05.98) 26è5'1" B. Tech (CSE).*

Employed as Software Engineer in MNC Chandigarh. Work from home. Father businessman, Mother housewife. Preferred IT, professional, businessman. Family settled at Peermuchhala, Zirakpur. Avoid Gotras: Jakhar, Mann, Kuhar. Cont.: 8146666411

- SM4 Jat Girl (DOB 08.01.99) 25è5'1" B. Sc., M.Sc., Preparing for UPSC exam. Father in Government service. Mother housewife. Family Business: Commission Agent (Anaj Mandi) and Pesticide Shop at Fatehabad (Haryana. Avoid Gotras: Garhwal, Mehra, Dhaka, Saharan. Cont.: 9467744400
- SM4 Jat Girl (DOB 18.01.95) 29è5'3" Post Graduate form Punjab University. Own business of immigration in Chandigarh. Father employed as Driver in Excise & Taxation Department Haryana at Kaithal. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Sangdoya, Sharan. Cont.: 9876931608, 9876085624
- SM4 Jat Girl (DOB 19.11.91) 33è5'3" B.Tech.(ECE). Post Graduate Diploma in Housing Finance. Working in Central Government PSU, LIC as Assistant on regular basis near Chandigarh. Transferable anywhere in India. Salary Rs. 8.5 LPA. Family settled at Panchkula. Preferred well settled city based family in Chandigarh, Panchkula, Hisar. Avoid Gotras: Thaken, Sindhu, Mahala, Sheoran. Cont.: 8557033198
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31è5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (DOB 17.11.94) 30è5'3" MBA (Post Graduate), B. Com. (Graduation) from ICFAI Business School Punjab University. PGDM, PG Certificate Program in Managing Brands & Marketing Communications. Working in Deloitte Office of India Gurugram. Salary Rs. 16 LPA. Father ETO in Haryana Government. Mother housewife and well educated. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Kodan, Nandal, Hooda, Kharb. Cont.: 9468274677.
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09. 97) 27è5'8" B. Tech. (CS) from YMCA Faridabad. Employed as Probationary Officer in State Bank of India since April, 2022. Pursuing for I.A.S. Father M. D. Cooperative Bank Fatehabad. Mother housewife (MA, B.Ed.) Avoid Gotras: Pattar, Moun, Goyat, Dhull, Punia. Cont.: 9467210303
- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.96) 28è5'4" BSC (Non-Medical). M.A. English. Employed as Accountant (Non transferable) in the office of Principal Accountant General (A&E) Haryana, Chandigarh. Father employed in a reputed Fertilizer & Chemical Company. Mother housewife. Family settled at Kurukshetra (Haryana). Avoid Gotras: Sheokand, Goyat. Cont.: 8199998908
- SM4 Jat Girl (DOB 04.03.98) 26è5'3" Lieutenant in Indian Army in EME branch. Posted in J & K area. Younger brother also Lieutenant in Indian Army. Father serving in Air Force. Mother Housewife. Avoid Gotras: Malik, Dhillon, Dangi. Cont.: 9541692438.
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28è5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Boy (DOB 19.08.97) 27è6'2" B. A. Diploma of Wrestling Coach. Providing wrestling coaching in private Akhada. Income Rs. 5-6 lakh per month. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled in Manimajra (U.T.). Avoid Gotras: Pahal, Malik, Panghal. Cont.: 9417630054
- SM4 Jat Boy (DOB May 1999) 26è5'7" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed as Software Engineer in reputed company at Banglore with package of Rs. 60 lakh per year. Father in Government job at Chandigarh. Mother housewife. Younger brother pursuing B. Tech. Avoid Gotras: Seniwal, Budania, Jhajhra. Cont.: 9417317416
- SM4 Jat Boy (DOB 10.08.97) 27è5'6" B. Tech. Civil Engineering from Jaypee University of Information Technology, Solan. MBA from NMIMS Mumbai. Working in HCL Tech. Noida. Father SDO in Panipat Thermal Plant. Mother Lecturer in Govt. Senior Sec. School. Own house in Zirakpur. Avoid Gotras: Dhanakhar, Ahlawat, Ghalawat. Cont.: 9355084570, 8222064128
- SM4 Jat Boy (DOB 24.08.97) 27è5'4" BAMS. Diploma in Maternal and Child Health. Employed as Medical Officer (RMO) in private hospital location Banglore. Salary Rs. 20.50 lakh P. A. Father Senior Lib. Assistant in MDU. Family settled in Rohtak. Avoid Gotras: Malik, Dhanakhar, Dahiya. Cont.: 9416514133
- SM4 Jat Boy (DOB 07.06.91) 33è5'6" B. Tech (IT). M. Tech, Cyber Security Macquarie University Sydney, Australia. Working as Network Engineer at HSC Gurugram (work from home). Has Canada Ontario PR-willing to move to Canada. Income 60000- PM. Family income Rs. 30-35 LPA. Father Advocate & notary. Mother PGT, Haryana Government school. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pannu, Phor, Malik. Cont.: 9888727222, 9877885365
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 29è5'9" B. Tech in Mechanical Engineer. Working as SEO Specialist in Mohali with package of Rs. 6 LPA and own side business. Father in Government job at Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009

- SM4 Jat Boy (DOB 1993) 31è5'8" Convent educated. Having rural and urban property. Architect by profession. Well settled family. Totally urban life. void Gotras: Malik, Khatkar. Cont.: 9465448508
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 30è5'11" B. Tech. Working as Software Engineer. Income Rs. 17 LPA. Father Professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 26è5'10" B. Com. Diploma in Computer. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229865, 9877552019
- SM4 Jat Boy (DOB 15.09.97) 27è5'10" B.Sc. Electronics. M.Sc. Physics. Employed as Assistant in Chief Secretary Office Chandigarh (Government job). Income Rs. 65000è-PM. Preferred match Government jobèwell educated. Avoid Gotras: Boora, Lohan, Banwala. Cont.: 8570878399
- SM4 Jat Boy (DOB 17.03.93) 32è5'10" MA English, NET, PhD. from MDU Rohtak. Working as Hindi Officer in AIIMS Bhubaneswar. Father working in private clinic as Optometrists. Mother working in PGIMS Rohtak. Preferred match well educated and working in Government sector. Avoid Gotras: Rathi, Mitharwal, Sindhu. Cont.: 9416337945
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 32è5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Haryana government. Mother in private job. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 1999) 25è 173 cm. B. Com, M.Com. Employed in Government in Haryana Civil Secretariat. Preferred match employed in government job. Avoid Gotras: Kharb, Siwach, Malik. Cont.: 9464177315
- SM4 Jat Boy (DOB 21.01.94) 30è5'11" B.A.LLB., LLM, International Commercial Law from Bournemouth University United Kingdom. Full time Restaurant Manager at Crab Restaurant Bournemouth. Father retired as Manager from Mahindra & Mahindra Ltd. Mohali. Mother retired from Haryana government. Own house in Chandigarh. Required match BCA, B.Sc., M.Sc., MBA, B. Tech. Willing to move to UK. Avoid Gotras: Khatkar, Panwar. Cont.: 9815554973
- SM4 Jat Boy (DOB 27.10.93) 31è5'9" B. Tech. Mechanical, MBA from Punjab University. Employed as Sub Inspector in Punjab Police at Mohali. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Preferred match height minimum 5'5". Avoid Gotras: Barak, Lathar, Narwal. Cont.: 9779666000, 8054575757, 7888808904
- SM4 Jat Boy (DOB 09.10.94) 30è5'9" B.A. Employed as Clerk in Chandigarh on contract basis. Father expired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Kundu. Cont.: 9888140762, 9888474668
- SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28è 6feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lathar, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853
- SM4 Jat Boy (DOB 08.05.95) 29è5'11" B.Sc., B.Ed. Self Occupation of Freight Broker in Mohali. Salary 12 LPA. Rental Income Rs. 25000è-.4.5 acre agriculture land. Father serving in Indian Air Force as JWO. Own house in Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Ravish, Mor, Ghanghas. Cont.: 9914092495
- SM4 Jat Boy (DOB 05.08.98) 27è 6'1". Graduation. Employed as Assistant in CPWD at NIT Jalandhar (Punjab). Father occupation: Business. Mother housewife. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Kharb, Tushir, Tokas. Cont.: 7027247620
- SM4 Jat Boy (DOB 15.08.98) 27è 6'2". B. Tech in Electrical Engineer from IIT Kanpur. Employed as Software Engineer in Amazon at Banglore with package of Rs. 60 LPA. Father retired Engineer from Science & Technology Department Haryana. Mother housewife. Preferred match well settled in similar field. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Puwar, Sangwan, Beniwal. Cont.: 9356067526.
- SM4 Jat Boy (DOB 07.03.93) 31è5'9" Graduate Diploma in Airlines form Punjab University. Own business of immigration in Chandigarh. Father employed as Driver in Excise & Taxation Department Haryana at Kaithal. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Sangdoya, Sharan. Cont.: 9876931608, 9876085624
- SM4 Jat Boy (DOB 20.06.96) 28è5'10" B. Tech Engineering from Punjab University Chandigarh. Working as Data Analyst with Innovaccer Noida. Salary Rs. 14.5 LPA. Also owns OPCA, a Car rental company in Chandigarh and generating handsome income. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Lohchab, Hooda. Cont.: 8146991568, 9877640592
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 27è 6feet. B. Tech (Computer Science). M.B.A. employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 16 LPA (work from home). Father retired Supervisor form HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house in Pinjore. . Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28è 6 feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lather, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853
- SM4 Jat Boy (DOB 15.01.94) 30è 6 feet. MBBS, M.D. in Medicine. Only son. Father businessman. 20 acre agriculture land. Two Aahrat shops at Fatehabad. Preferred match of same profession. Avoid Gotras: Bharia, Saharan, Bhidaria. Cont.: 7015176069

जाट सभ्यता विश्व की महान सभ्यताओं में से एक - डॉ. एम.एस.मलिक

बिजनौर में 36वाँ जाट संस्कृतिक सम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

संबोधित करते हुए डॉ. एम.एस. मलिक

नशामुक्ति की शपथ दिलाते हुए अतिथिगण

संबोधित करते हुए डॉ. अनिल सिंह

डॉ. एम.एस. मलिक द्वारा बहिन सुमनलता सम्मानित

संबोधित करते हुए न्यायमूर्ति श्री आर.ए. सिंह

संबोधित करते हुए श्री ओमपाल सिंह राठी

विश्व जाट संस्कृति परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष व सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक डॉ. महेंद्र सिंह मलिक जी ने कहा कि जाट संस्कृति विश्व की अग्रणी और विकसित कल्चर है। विश्व की महान मानव सभ्यताओं में से जाट सभ्यता एक है।

बजनौर में आयोजित 36वें जाट संस्कृति सम्मेलन को मुख्य अतिथि के पद से सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हमें समाज के सभी वर्गों के साथ अच्छा व्यवहार और सामाजिक भाईचारा अपनाना चाहिए। श्री मलिक ने नई पीढ़ी से शिक्षा और स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने का आह्वान करते हुए नशामुक्त परिवार की स्थापना पर बल दिया। उन्होंने कहा कि नशा हमारे स्वास्थ्य के साथ परिवार और समाज के लिए हानिकारक है। जाट सभा चंडीगढ़ एवं सामाजिक संस्थाओं के नेतृत्वकर्ता डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक जी ने खेती को पूर्वजों की धरोहर बताते हुए उसे संरक्षित करने का आहवान किया। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के साथ कुरीतियों से दूर रहने व सकारात्मक सोच विकसित करने पर बल दिया।

उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति विद्वान् न्यायमूर्ति श्री राम अवतार सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न जाट संस्कृति समारोह को उत्तराखंड जाट महासभा के प्रदेश अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय जाट महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ओमपाल सिंह राठी, राज्य सूचना आयुक्त उत्तर प्रदेश श्री राजेन्द्र सिंह, अखिल भारतीय गोत्र प्रतिनिधि सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं भगवन्त ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अनिल सिंह, नगर पालिका परिषद की अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती सुमन चौधरी, महिला नेत्री श्रीमती मनोज डागर (जयपुर), वरिष्ठ अधिकारी डॉ. प्रमोद देशवाल आदि ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन जाट संस्कृति सम्मेलन के संयोजक सुरेश आर्य ने किया।

कार्यक्रम में पूर्व डीजीपी डॉ. एम. एम. मलिक जी एवं मंचस्थ अतिथियों द्वारा नशामुक्त परिवार के लिए सामूहिक शपथ दिलाई गयी। सम्मेलन में समाज से सम्बन्धित 10 सामाजिक प्रस्तावों को पारित किया गया। इस अवसर पर खिलाडियों, मेधावी छात्रों एवं वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि विश्व जाट संस्कृति परिषद की ओर से प्रतिवर्ष बिजनौर में जाट संस्कृति समारोह का आयोजन किया जाता है। मुख्य अतिथि डॉ. एम. एस. मलिक का स्वागत किया गया।

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417

श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।